Model: 3Varshphal-Horoscope-Platinum
SrNo: 112-114-105-1023 / 509
Date: 07/11/2019

| | | |
|---|---|---|
| पुल्लिंग | लिंग | पुल्लिंग |
| **10/01/1974** | जन्म तिथि | **10-11/01/2019** |
| गुरुवार | दिन | गुरु–शुक्रवार |
| घंटे 12:00:00 | जन्म समय | 00:49:20 घंटे |
| घटी 11:54:11 | जन्म समय(घटी) | 43:57:31 घटी |
| India | देश | India |
| Mumbai | स्थान | Mumbai |
| उत्तर 18:58:00 | अक्षांश | 18:58:00 उत्तर |
| पूर्व 72:50:00 | रेखांश | 72:50:00 पूर्व |
| पूर्व 82:30:00 | मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| घंटे -00:38:40 | स्थानिक संस्कार | -00:38:40 घंटे |
| घंटे 00:00:00 | ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| 07:14:19 | सूर्योदय | 07:14:19 |
| 18:17:17 | सूर्यास्त | 18:17:59 |
| 23:29:58 | चित्रपक्षीय अयनांश | 24:07:08 |

| | | |
|---|---|---|
| मीन | लग्न | कन्या |
| गुरु | लग्न लग्नाधिपति | बुध |
| कर्क | राशि | कुम्भ |
| चन्द्र | राशि–स्वामी | शनि |
| आश्लेषा | नक्षत्र | शतभिषा |
| बुध | नक्षत्र स्वामी | राहु |
| 2 | चरण | 4 |
| प्रीति | योग | व्यतिपात |
| वणिज | करण | बव |
| डू–डूंगरमल | जन्म नामाक्षर | सू–सुगन्धा |
| मकर | सूर्य राशि(पाश्चात्य) | मकर |
| विप्र | वर्ण | शूद्र |
| जलचर | वश्य | मानव |
| मार्जार | योनि | अश्व |
| राक्षस | गण | राक्षस |
| अन्त्य | नाड़ी | आद्य |
| श्वान | वर्ग | मेष |
| 45 | गत / तत्कालिक वर्ष | 46 |

## जन्म – विवरण

| नक्षत्र | पद | अंश | राशि | व | अ |
|---|---|---|---|---|---|
| रेवती | 1 | 18:55:35 | मीन | | |
| पूर्वाषाढ़ा | 4 | 26:08:06 | धनु | | |
| आश्लेषा | 2 | 20:53:31 | कर्क | | |
| अश्विनी | 4 | 12:37:35 | मेष | | |
| उत्तराषाढ़ा | 1 | 26:42:18 | धनु | | अ |
| श्रवण | 4 | 22:58:23 | मक | | |
| श्रवण | 3 | 16:50:31 | मक | व | |
| मृगशिरा | 4 | 06:19:01 | मिथु | व | |
| मूल | 2 | 05:00:22 | धनु | व | |
| मृगशिरा | 4 | 04:03:29 | मिथु | व | |
| चित्रा | 4 | 04:03:29 | तुला | | |

## वर्ष – विवरण

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | पद | नक्षत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | कन्या | 27:18:05 | 2 | चित्रा |
| सूर्य | | | धनु | 26:08:06 | 4 | पूर्वाषाढ़ा |
| चंद्र | | | कुंभ | 17:29:36 | 4 | शतभिषा |
| मंगल | | | मीन | 12:25:30 | 3 | उ०भाद्रपद |
| बुध | | अ | धनु | 14:27:52 | 1 | पूर्वाषाढ़ा |
| गुरु | | | वृश्चि | 19:40:05 | 1 | ज्येष्ठा |
| शुक्र | | | वृश्चि | 09:20:26 | 2 | अनुराधा |
| शनि | | अ | धनु | 18:24:55 | 2 | पूर्वाषाढ़ा |
| राहु | | | कर्क | 02:37:51 | 4 | पुनर्वसु |
| केतु | | | मक | 02:37:51 | 2 | उत्तराषाढ़ा |
| मु | | अ | धनु | 18:55:35 | 2 | पूर्वाषाढ़ा |

व – वक्री  स – स्थिर
अ – अस्त  पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

**चित्रपक्षीय अयनांश : 24:07:08**

## लग्न–चलित

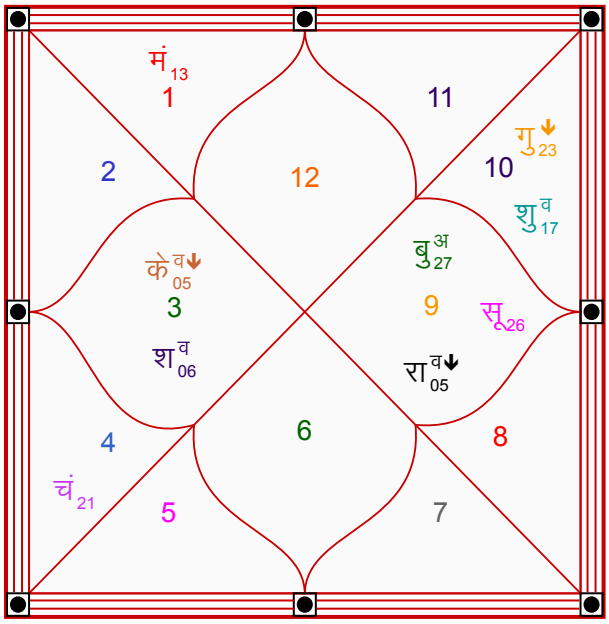


## वर्ष लग्न कुंडली

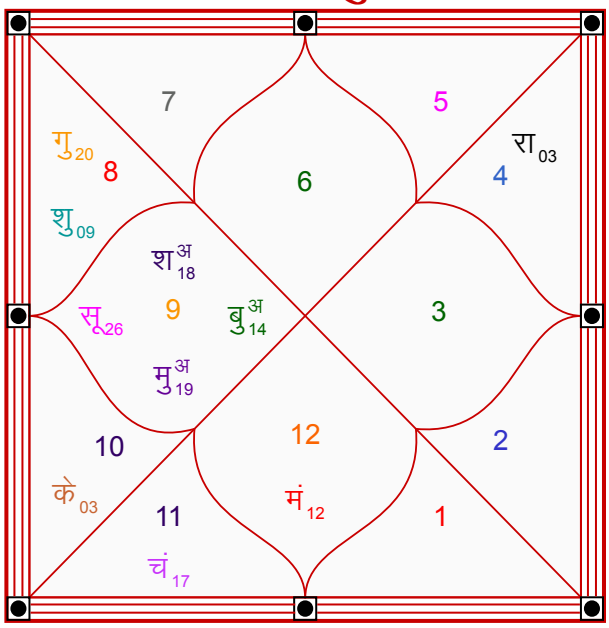

## चन्द्र कुंडली

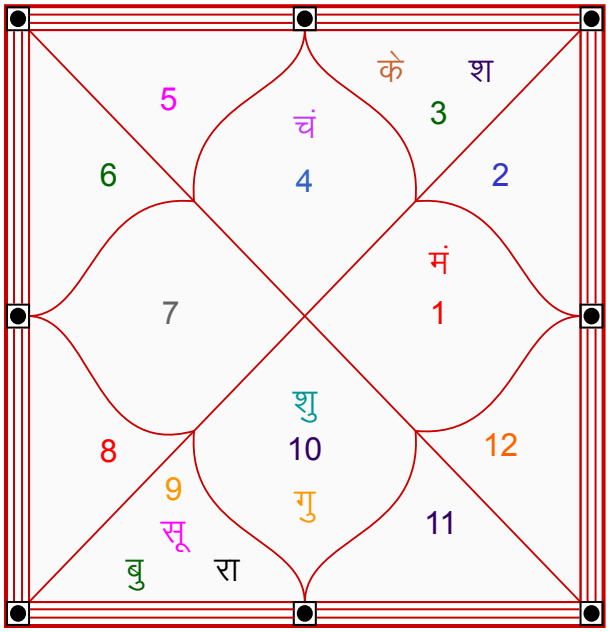


## वर्ष चन्द्र कुंडली

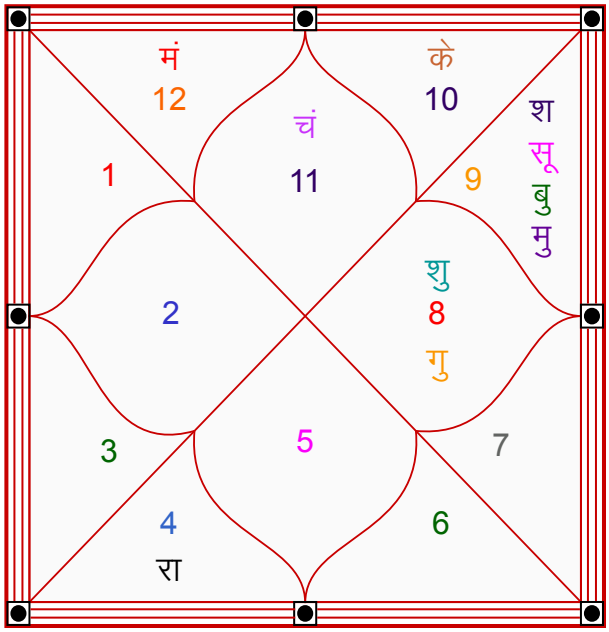


## नवमांश कुंडली

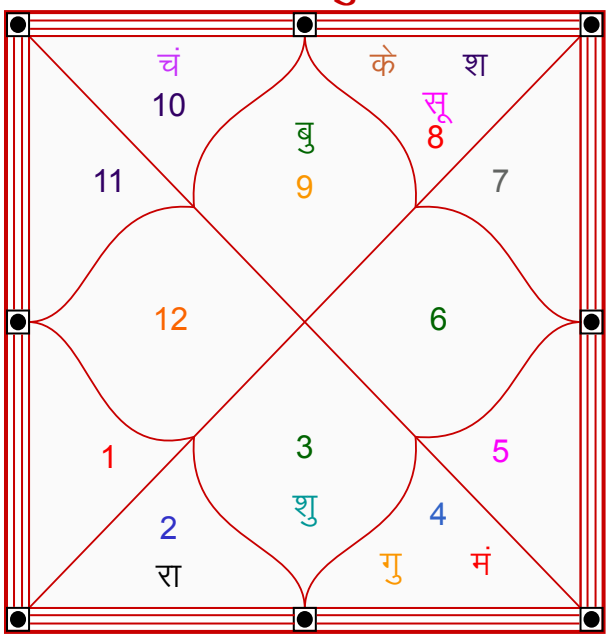


## वर्ष नवमांश कुंडली

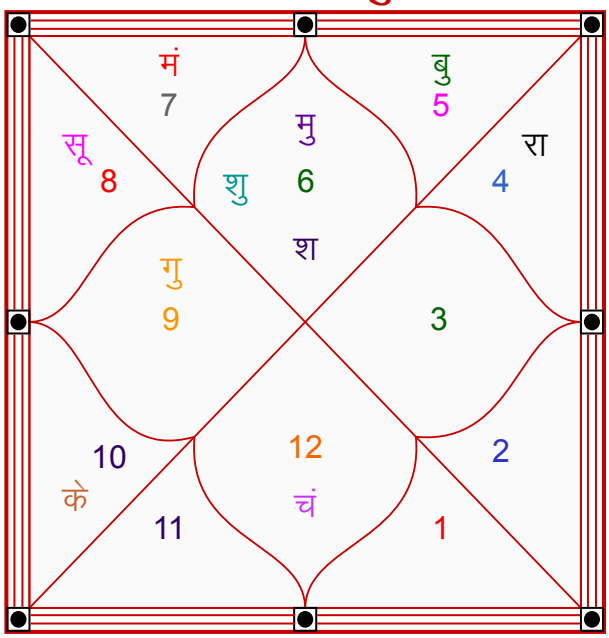

## मैत्री सारिणी

| | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | ——— | मित्र | शत्रु | शत्रु | सम | सम | शत्रु |
| चन्द्र | मित्र | ——— | सम | मित्र | शत्रु | शत्रु | मित्र |
| मंगल | शत्रु | सम | ——— | शत्रु | मित्र | मित्र | शत्रु |
| बुध | शत्रु | मित्र | शत्रु | ——— | सम | सम | शत्रु |
| गुरु | सम | शत्रु | मित्र | सम | ——— | शत्रु | सम |
| शुक्र | सम | शत्रु | मित्र | सम | शत्रु | ——— | सम |
| शनि | शत्रु | मित्र | शत्रु | शत्रु | सम | सम | ——— |

## द्वादशवर्ग सारिणी

| | लग्न | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | कन्या | धनु | कुंभ | मीन | धनु | वृश्चि | वृश्चि | धनु |
| होरा | सिंह | कर्क | कर्क | कर्क | सिंह | सिंह | कर्क | कर्क |
| द्रेष्काण | कन्या | कुंभ | मिथु | मीन | कर्क | सिंह | वृश्चि | कर्क |
| चतुर्थांश | मिथु | कन्या | सिंह | मिथु | मीन | वृष | कुंभ | मिथु |
| पंचमांश | वृश्चि | तुला | धनु | मीन | धनु | मक | कन्या | मिथु |
| षष्ठांश | मीन | कन्या | कर्क | धनु | मिथु | मक | वृश्चि | कर्क |
| सप्तमांश | कन्या | मिथु | मिथु | वृश्चि | मीन | कन्या | कर्क | मेष |
| अष्टमांश | धनु | वृश्चि | धनु | सिंह | सिंह | मक | तुला | कन्या |
| नवमांश | कन्या | वृश्चि | मीन | तुला | सिंह | धनु | कन्या | कन्या |
| दशमांश | कुंभ | सिंह | कर्क | मीन | मेष | मक | तुला | मिथु |
| एकादशांश | मिथु | सिंह | कर्क | मिथु | मेष | वृष | मक | वृष |
| द्वादशांश | कर्क | तुला | सिंह | कर्क | वृष | मिथु | कुंभ | कर्क |

## द्वादशवर्गीय बल

| | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | सम | मित्र | मित्र | सम | मित्र | मित्र | सम |
| होरा | मित्र | स्व | सम | शत्रु | सम | शत्रु | मित्र |
| द्रेष्काण | शत्रु | मित्र | मित्र | मित्र | सम | मित्र | मित्र |
| चतुर्थांश | शत्रु | मित्र | शत्रु | सम | शत्रु | सम | शत्रु |
| पंचमांश | सम | शत्रु | मित्र | सम | सम | सम | शत्रु |
| षष्ठांश | शत्रु | स्व | मित्र | स्व | सम | मित्र | मित्र |
| सप्तमांश | शत्रु | मित्र | स्व | सम | सम | शत्रु | शत्रु |
| अष्टमांश | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | सम | स्व | शत्रु |
| नवमांश | शत्रु | शत्रु | मित्र | शत्रु | स्व | सम | शत्रु |
| दशमांश | स्व | स्व | मित्र | शत्रु | सम | स्व | शत्रु |
| एकादशांश | स्व | स्व | शत्रु | शत्रु | शत्रु | सम | सम |
| द्वादशांश | सम | मित्र | सम | सम | सम | सम | मित्र |
| शुभ | 3 | 9 | 7 | 2 | 2 | 5 | 4 |
| सम | 3 | 0 | 2 | 5 | 8 | 5 | 2 |
| अशुभ | 6 | 3 | 3 | 5 | 2 | 2 | 6 |
| कुल | अशुभ | शुभ | शुभ | अशुभ | सम | शुभ | अशुभ |

## हर्ष बल

| | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| द्वितीय बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| तृतीय बल | 5 | 0 | 0 | 0 | 0 | 5 | 0 |
| चतुर्थ बल | 0 | 5 | 0 | 5 | 0 | 5 | 5 |
| कुल | 5 | 5 | 0 | 5 | 0 | 10 | 5 |
| **बल** | **क्षीण** | **क्षीण** | **अतिक्षीण** | **क्षीण** | **अतिक्षीण** | **सामान्य** | **क्षीण** |

## पंचवर्गीय बल

| | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्षेत्रीय बल | 15.00 | 22.50 | 22.50 | 15.00 | 22.50 | 22.50 | 15.00 |
| उच्च बल | 8.46 | 11.61 | 15.06 | 10.06 | 5.04 | 4.70 | 13.51 |
| हददा बल | 3.75 | 3.75 | 11.25 | 7.50 | 15.00 | 15.00 | 3.75 |
| द्रेष्काण | 2.50 | 7.50 | 7.50 | 7.50 | 5.00 | 7.50 | 7.50 |
| नवमांश | 1.25 | 1.25 | 3.75 | 1.25 | 5.00 | 2.50 | 1.25 |
| कुल | 30.96 | 46.61 | 60.06 | 41.31 | 52.54 | 52.20 | 41.01 |
| विंशोपक | 7.74 | 11.65 | 15.02 | 10.33 | 13.13 | 13.05 | 10.25 |
| **बल** | **सामान्य** | **शुभ** | **बली** | **शुभ** | **शुभ** | **शुभ** | **शुभ** |

## वर्षेश निर्णय

| स्वामित्व | ग्रह | बल | लग्न पर दृष्टि | वर्षेश |
|---|---|---|---|---|
| जन्म लग्नाधिपति | गुरु | 13.13 | शुभ | |
| वर्ष लग्नाधिपति | बुध | 10.33 | अशुभ | |
| मुन्था लग्नाधिपति | गुरु | 13.13 | शुभ | **शुक्र** |
| दिवापति | शनि | 10.25 | अशुभ | |
| त्रिराशिपति | शुक्र | 13.05 | शुभ | |

# सहम

सहम जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को प्रदर्शित करने वाली विशेष स्थिति या बिन्दु है। ग्रह या भावों के विपरीत सहम जीवन की एक ही घटना से संबंध रखता है। आचार्य नीलकंठ के अनुसार सहम 50 हैं। यदि सहम और इसका स्वामी शुभ हो या शुभदृष्ट हो तो यह सांकेतिक घटना के लिए शुभ फल प्रदान करता है। ताजिक शास्त्र के अनुसार किसी भी घटना की अवधि को इसकी स्थिति, स्वामी तथा उस राशि की स्थिति से ज्ञात किया जाता है जिसमें यह स्थित है। नीचे सहमों की गणना करके उनकी संभावित तिथियां दी गई हैं जो अग्रिम फलादेश में सहायक सिद्ध हो सकेंगी।

| सहम | राशि | अंश | स्वा | घटना तिथि |
|---|---|---|---|---|
| पुण्य | सिंह | 05:56:35 | सूर्य | 03/07/2019 |
| गुरु | धनु | 18:39:35 | गुरु | 12/02/2019 |
| ज्ञान | धनु | 18:39:35 | गुरु | 12/02/2019 |
| यश | कर्क | 13:34:35 | चन्द्र | 08/05/2019 |
| मित्र | कर्क | 26:37:26 | चन्द्र | 19/05/2019 |
| माहात्म्य | वृष | 03:47:00 | शुक्र | 13/07/2019 |
| आशा | सिंह | 18:13:36 | सूर्य | 12/07/2019 |
| समर्थ | मिथुन | 29:20:27 | बुध | 07/07/2019 |
| भातृ | सिंह | 28:33:15 | सूर्य | 20/07/2019 |
| गौरव | मेष | 23:57:38 | मंगल | 26/02/2019 |
| राजा | वृश्चिक | 05:01:16 | मंगल | 24/09/2019 |
| पितृ | वृश्चिक | 05:01:16 | मंगल | 24/09/2019 |
| मातृ | मिथुन | 19:08:55 | बुध | 28/06/2019 |
| सुत | मिथुन | 29:28:34 | बुध | 07/07/2019 |
| जीव | वृश्चिक | 26:02:55 | मंगल | 18/10/2019 |
| अम्बु | मिथुन | 19:08:55 | बुध | 28/06/2019 |
| कर्म | मिथुन | 29:20:27 | बुध | 07/07/2019 |
| रोग | कुम्भ | 17:29:36 | शनि | 14/03/2019 |
| कामदेव | कर्क | 24:16:21 | चन्द्र | 17/05/2019 |
| कलि | कुम्भ | 20:03:30 | शनि | 17/03/2019 |
| क्षेम | कुम्भ | 20:03:30 | शनि | 17/03/2019 |
| शास्त्र | मकर | 13:12:42 | शनि | 06/02/2019 |
| बन्धु | कर्क | 24:16:21 | चन्द्र | 17/05/2019 |
| बंधक | कर्क | 24:16:21 | चन्द्र | 17/05/2019 |
| मृत्यु | मीन | 28:04:41 | गुरु | 04/06/2019 |

# सहम

| सहम | राशि | अंश | स्वा | घटना तिथि |
|---|---|---|---|---|
| परदेश | वृष | 14:58:19 | शुक्र | 24/07/2019 |
| अर्थ | कन्या | 15:07:01 | बुध | 01/09/2019 |
| परदारा | सिंह | 10:30:25 | सूर्य | 06/07/2019 |
| अन्यकर्म | धनु | 26:22:46 | गुरु | 20/02/2019 |
| वणिक | मकर | 00:19:49 | शनि | 23/01/2019 |
| कार्यसिद्धि | वृश्चिक | 11:56:54 | मंगल | 02/10/2019 |
| विवाह | सिंह | 18:13:36 | सूर्य | 12/07/2019 |
| प्रसूति | कन्या | 02:30:17 | बुध | 21/08/2019 |
| संताप | धनु | 28:04:41 | गुरु | 22/02/2019 |
| श्रद्धा | वृष | 24:13:01 | शुक्र | 03/08/2019 |
| प्रीति | कुम्भ | 10:01:05 | शनि | 06/03/2019 |
| बल | कर्क | 13:34:35 | चन्द्र | 08/05/2019 |
| देह | कर्क | 13:34:35 | चन्द्र | 08/05/2019 |
| जाडय | मेष | 08:28:27 | मंगल | 09/02/2019 |
| व्यापार | मकर | 25:15:43 | शनि | 19/02/2019 |
| जलपतन | मेष | 08:28:27 | मंगल | 09/02/2019 |
| शत्रु | मकर | 21:18:40 | शनि | 15/02/2019 |
| शौर्य | मीन | 20:49:10 | गुरु | 27/05/2019 |
| उपाय | वृश्चिक | 26:02:55 | मंगल | 18/10/2019 |
| दरिद्रता | सिंह | 05:56:35 | सूर्य | 03/07/2019 |
| गुरुता | कुम्भ | 11:09:59 | शनि | 07/03/2019 |
| जलपथ | वृष | 23:53:10 | शुक्र | 03/08/2019 |
| बंधन | मिथुन | 14:49:45 | बुध | 24/06/2019 |
| कन्या | मिथुन | 19:08:55 | बुध | 28/06/2019 |
| अश्व | मीन | 06:49:09 | गुरु | 11/05/2019 |

## वर्ष त्रिपताकी कुंडली

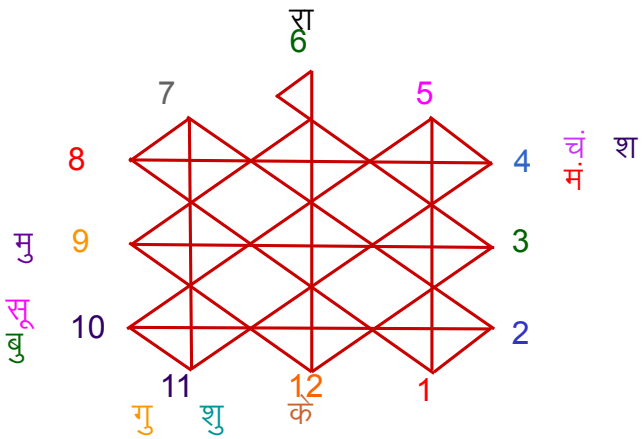

# पात्यंश दशा

| शुक्र | | मंगल | | बुध | | चंद्र | | शनि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11/01/2019 | | 15/05/2019 | | 26/06/2019 | | 23/07/2019 | | 02/09/2019 | |
| 15/05/2019 | | 26/06/2019 | | 23/07/2019 | | 02/09/2019 | | 14/09/2019 | |
| शुक्र | 22/02/2019 | मंगल | 20/05/2019 | बुध | 28/06/2019 | चंद्र | 28/07/2019 | शनि | 02/09/2019 |
| मंगल | 08/03/2019 | बुध | 23/05/2019 | चंद्र | 01/07/2019 | शनि | 29/07/2019 | गुरु | 03/09/2019 |
| बुध | 18/03/2019 | चंद्र | 28/05/2019 | शनि | 02/07/2019 | गुरु | 31/07/2019 | सूर्य | 05/09/2019 |
| चंद्र | 01/04/2019 | शनि | 29/05/2019 | गुरु | 03/07/2019 | सूर्य | 09/08/2019 | लग्न | 06/09/2019 |
| शनि | 05/04/2019 | गुरु | 31/05/2019 | सूर्य | 09/07/2019 | लग्न | 11/08/2019 | शुक्र | 10/09/2019 |
| गुरु | 11/04/2019 | सूर्य | 10/06/2019 | लग्न | 11/07/2019 | शुक्र | 25/08/2019 | मंगल | 12/09/2019 |
| सूर्य | 10/05/2019 | लग्न | 12/06/2019 | शुक्र | 20/07/2019 | मंगल | 30/08/2019 | बुध | 13/09/2019 |
| लग्न | 15/05/2019 | शुक्र | 26/06/2019 | मंगल | 23/07/2019 | बुध | 02/09/2019 | चंद्र | 14/09/2019 |

| गुरु | | सूर्य | | लग्न | | लग्न | | लग्न | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14/09/2019 | | 01/10/2019 | | 26/12/2019 | | 26/12/2019 | | 26/12/2019 | |
| 01/10/2019 | | 26/12/2019 | | 11/01/2020 | | 11/01/2020 | | 11/01/2020 | |
| गुरु | 15/09/2019 | सूर्य | 21/10/2019 | लग्न | 27/12/2019 | लग्न | 27/12/2019 | लग्न | 27/12/2019 |
| सूर्य | 19/09/2019 | लग्न | 25/10/2019 | शुक्र | 01/01/2020 | शुक्र | 01/01/2020 | शुक्र | 01/01/2020 |
| लग्न | 19/09/2019 | शुक्र | 23/11/2019 | मंगल | 03/01/2020 | मंगल | 03/01/2020 | मंगल | 03/01/2020 |
| शुक्र | 25/09/2019 | मंगल | 03/12/2019 | बुध | 04/01/2020 | बुध | 04/01/2020 | बुध | 04/01/2020 |
| मंगल | 27/09/2019 | बुध | 10/12/2019 | चंद्र | 06/01/2020 | चंद्र | 06/01/2020 | चंद्र | 06/01/2020 |
| बुध | 28/09/2019 | चंद्र | 19/12/2019 | शनि | 06/01/2020 | शनि | 06/01/2020 | शनि | 06/01/2020 |
| चंद्र | 30/09/2019 | शनि | 22/12/2019 | गुरु | 07/01/2020 | गुरु | 07/01/2020 | गुरु | 07/01/2020 |
| शनि | 01/10/2019 | गुरु | 26/12/2019 | सूर्य | 11/01/2020 | सूर्य | 11/01/2020 | सूर्य | 11/01/2020 |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
पात्यंश दशा पूरे 1 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

# मुद्दा दशा

| बुध | | केतु | | शुक्र | | सूर्य | | चंद्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11/01/2019 | | 03/03/2019 | | 25/03/2019 | | 24/05/2019 | | 12/06/2019 | |
| 03/03/2019 | | 25/03/2019 | | 24/05/2019 | | 12/06/2019 | | 12/07/2019 | |
| बुध | 18/01/2019 | केतु | 05/03/2019 | शुक्र | 04/04/2019 | सूर्य | 25/05/2019 | चंद्र | 14/06/2019 |
| केतु | 21/01/2019 | शुक्र | 08/03/2019 | सूर्य | 07/04/2019 | चंद्र | 27/05/2019 | मंगल | 16/06/2019 |
| शुक्र | 30/01/2019 | सूर्य | 09/03/2019 | चंद्र | 12/04/2019 | मंगल | 28/05/2019 | राहु | 21/06/2019 |
| सूर्य | 01/02/2019 | चंद्र | 11/03/2019 | मंगल | 15/04/2019 | राहु | 31/05/2019 | गुरु | 25/06/2019 |
| चंद्र | 05/02/2019 | मंगल | 12/03/2019 | राहु | 25/04/2019 | गुरु | 02/06/2019 | शनि | 29/06/2019 |
| मंगल | 08/02/2019 | राहु | 15/03/2019 | गुरु | 03/05/2019 | शनि | 05/06/2019 | बुध | 04/07/2019 |
| राहु | 16/02/2019 | गुरु | 18/03/2019 | शनि | 12/05/2019 | बुध | 08/06/2019 | केतु | 06/07/2019 |
| गुरु | 23/02/2019 | शनि | 22/03/2019 | बुध | 21/05/2019 | केतु | 09/06/2019 | शुक्र | 11/07/2019 |
| शनि | 03/03/2019 | बुध | 25/03/2019 | केतु | 24/05/2019 | शुक्र | 12/06/2019 | सूर्य | 12/07/2019 |

| मंगल | | राहु | | गुरु | | शनि | | बुध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12/07/2019 | | 02/08/2019 | | 26/09/2019 | | 14/11/2019 | | 11/01/2020 | |
| 02/08/2019 | | 26/09/2019 | | 14/11/2019 | | 11/01/2020 | | 00/00/0000 | |
| मंगल | 13/07/2019 | राहु | 11/08/2019 | गुरु | 03/10/2019 | शनि | 23/11/2019 | बुध | 11/01/2020 |
| राहु | 17/07/2019 | गुरु | 18/08/2019 | शनि | 10/10/2019 | बुध | 01/12/2019 | | 00/00/0000 |
| गुरु | 19/07/2019 | शनि | 27/08/2019 | बुध | 17/10/2019 | केतु | 05/12/2019 | | 00/00/0000 |
| शनि | 23/07/2019 | बुध | 03/09/2019 | केतु | 20/10/2019 | शुक्र | 14/12/2019 | | 00/00/0000 |
| बुध | 26/07/2019 | केतु | 07/09/2019 | शुक्र | 28/10/2019 | सूर्य | 17/12/2019 | | 00/00/0000 |
| केतु | 27/07/2019 | शुक्र | 16/09/2019 | सूर्य | 31/10/2019 | चंद्र | 22/12/2019 | | 00/00/0000 |
| शुक्र | 31/07/2019 | सूर्य | 18/09/2019 | चंद्र | 04/11/2019 | मंगल | 25/12/2019 | | 00/00/0000 |
| सूर्य | 01/08/2019 | चंद्र | 23/09/2019 | मंगल | 07/11/2019 | राहु | 03/01/2020 | | 00/00/0000 |
| चंद्र | 02/08/2019 | मंगल | 26/09/2019 | राहु | 14/11/2019 | गुरु | 11/01/2020 | | 00/00/0000 |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
मुद्दा दशा पूरे 1 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

# विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

| चंद्र - मंगल - केतु | |
|---|---|
| **06/11/2019 09:43** | |
| **18/11/2019 20:00** | |
| केतु | 07/11/2019 03:07 |
| शुक्र | 09/11/2019 04:49 |
| सूर्य | 09/11/2019 19:44 |
| चंद्र | 10/11/2019 20:36 |
| मंगल | 11/11/2019 14:00 |
| राहु | 13/11/2019 10:44 |
| गुरु | 15/11/2019 02:31 |
| शनि | 17/11/2019 01:44 |
| बुध | 18/11/2019 20:00 |

| चंद्र - मंगल - शुक्र | |
|---|---|
| **18/11/2019 20:00** | |
| **24/12/2019 08:15** | |
| शुक्र | 24/11/2019 18:02 |
| सूर्य | 26/11/2019 12:39 |
| चंद्र | 29/11/2019 11:40 |
| मंगल | 01/12/2019 13:23 |
| राहु | 06/12/2019 21:13 |
| गुरु | 11/12/2019 14:51 |
| शनि | 17/12/2019 05:48 |
| बुध | 22/12/2019 06:32 |
| केतु | 24/12/2019 08:15 |

| चंद्र - मंगल - सूर्य | |
|---|---|
| **24/12/2019 08:15** | |
| **03/01/2020 23:55** | |
| सूर्य | 24/12/2019 21:02 |
| चंद्र | 25/12/2019 18:20 |
| मंगल | 26/12/2019 09:15 |
| राहु | 27/12/2019 23:36 |
| गुरु | 29/12/2019 09:42 |
| शनि | 31/12/2019 02:10 |
| बुध | 01/01/2020 14:24 |
| केतु | 02/01/2020 05:19 |
| शुक्र | 03/01/2020 23:55 |

| चंद्र - मंगल - चंद्र | |
|---|---|
| **03/01/2020 23:55** | |
| **21/01/2020 18:03** | |
| चंद्र | 05/01/2020 11:26 |
| मंगल | 06/01/2020 12:17 |
| राहु | 09/01/2020 04:12 |
| गुरु | 11/01/2020 13:01 |
| शनि | 14/01/2020 08:30 |
| बुध | 16/01/2020 20:52 |
| केतु | 17/01/2020 21:43 |
| शुक्र | 20/01/2020 20:44 |
| सूर्य | 21/01/2020 18:03 |

| चंद्र - राहु - राहु | |
|---|---|
| **21/01/2020 18:03** | |
| **12/04/2020 22:24** | |
| राहु | 03/02/2020 01:54 |
| गुरु | 14/02/2020 00:53 |
| शनि | 27/02/2020 01:10 |
| बुध | 09/03/2020 16:35 |
| केतु | 14/03/2020 11:38 |
| शुक्र | 28/03/2020 04:22 |
| सूर्य | 01/04/2020 06:59 |
| चंद्र | 08/04/2020 03:21 |
| मंगल | 12/04/2020 22:24 |

| चंद्र - राहु - गुरु | |
|---|---|
| **12/04/2020 22:24** | |
| **24/06/2020 23:36** | |
| गुरु | 22/04/2020 16:09 |
| शनि | 04/05/2020 05:45 |
| बुध | 14/05/2020 14:07 |
| केतु | 18/05/2020 20:23 |
| शुक्र | 31/05/2020 00:35 |
| सूर्य | 03/06/2020 16:15 |
| चंद्र | 09/06/2020 18:21 |
| मंगल | 14/06/2020 00:37 |
| राहु | 24/06/2020 23:36 |

| चंद्र - राहु - शनि | |
|---|---|
| **24/06/2020 23:36** | |
| **19/09/2020 17:31** | |
| शनि | 08/07/2020 17:14 |
| बुध | 21/07/2020 00:10 |
| केतु | 26/07/2020 01:37 |
| शुक्र | 09/08/2020 12:36 |
| सूर्य | 13/08/2020 20:42 |
| चंद्र | 21/08/2020 02:12 |
| मंगल | 26/08/2020 03:39 |
| राहु | 08/09/2020 03:56 |
| गुरु | 19/09/2020 17:31 |

| चंद्र - राहु - बुध | |
|---|---|
| **19/09/2020 17:31** | |
| **06/12/2020 08:18** | |
| बुध | 30/09/2020 17:25 |
| केतु | 05/10/2020 06:05 |
| शुक्र | 18/10/2020 04:32 |
| सूर्य | 22/10/2020 01:41 |
| चंद्र | 28/10/2020 12:55 |
| मंगल | 02/11/2020 01:34 |
| राहु | 13/11/2020 16:59 |
| गुरु | 24/11/2020 01:21 |
| शनि | 06/12/2020 08:18 |

| चंद्र - राहु - केतु | |
|---|---|
| **06/12/2020 08:18** | |
| **07/01/2021 07:19** | |
| केतु | 08/12/2020 05:02 |
| शुक्र | 13/12/2020 12:53 |
| सूर्य | 15/12/2020 03:14 |
| चंद्र | 17/12/2020 19:09 |
| मंगल | 19/12/2020 15:53 |
| राहु | 24/12/2020 10:57 |
| गुरु | 28/12/2020 17:13 |
| शनि | 02/01/2021 18:40 |
| बुध | 07/01/2021 07:19 |

| चंद्र - राहु - शुक्र | |
|---|---|
| **07/01/2021 07:19** | |
| **08/04/2021 14:49** | |
| शुक्र | 22/01/2021 12:34 |
| सूर्य | 27/01/2021 02:09 |
| चंद्र | 03/02/2021 16:46 |
| मंगल | 09/02/2021 00:37 |
| राहु | 22/02/2021 17:20 |
| गुरु | 06/03/2021 21:32 |
| शनि | 21/03/2021 08:31 |
| बुध | 03/04/2021 06:59 |
| केतु | 08/04/2021 14:49 |

| चंद्र - राहु - सूर्य | |
|---|---|
| **08/04/2021 14:49** | |
| **06/05/2021 00:16** | |
| सूर्य | 09/04/2021 23:42 |
| चंद्र | 12/04/2021 06:29 |
| मंगल | 13/04/2021 20:50 |
| राहु | 17/04/2021 23:27 |
| गुरु | 21/04/2021 15:07 |
| शनि | 25/04/2021 23:12 |
| बुध | 29/04/2021 20:21 |
| केतु | 01/05/2021 10:42 |
| शुक्र | 06/05/2021 00:16 |

| चंद्र - राहु - चंद्र | |
|---|---|
| **06/05/2021 00:16** | |
| **20/06/2021 16:01** | |
| चंद्र | 09/05/2021 19:35 |
| मंगल | 12/05/2021 11:30 |
| राहु | 19/05/2021 07:52 |
| गुरु | 25/05/2021 09:58 |
| शनि | 01/06/2021 15:28 |
| बुध | 08/06/2021 02:41 |
| केतु | 10/06/2021 18:37 |
| शुक्र | 18/06/2021 09:14 |
| सूर्य | 20/06/2021 16:01 |

# वर्ष योग

## इक्कबाल योग

यदि वर्ष कुंडली में सभी ग्रह केन्द्र (1, 4, 7, 10) और पणफर (2, 5, 8, 11) स्थानों में हो तो इक्कबाल नामक योग होता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

## इन्दुवार योग

वर्ष कुंडली में यदि सूर्यादि सभी ग्रह आपीक्लिम (3, 6, 9, 12) स्थानों में हो तो इन्दुवार योग होता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

## इत्थशाल योग

यदि लग्नेश और अन्य ग्रह (कार्येश) की परस्पर दृष्टि हो तथा दोनों ग्रह दीप्तांशों के अन्तर्गत हों तो इत्थशाल योग होता है। यह तीन प्रकार का होता है। वर्तमान, सम्पूर्ण और भविष्यत। सम्पूर्ण इत्थशाल तब होता है जबकि शीघ्रगामी ग्रह मन्दगति ग्रह से 1 कला के अंतर पर हो। वर्तमान इत्थशाल में शीघ्रगति वाले ग्रह के अंश कम एवं मन्दगति ग्रह के अंश अधिक हों तथा दोनों की परस्पर दृष्टि हो। भविष्यत इत्थशाल तब होता है जबकि शीघ्रगति ग्रह राशि के अन्तिम अंश में हो तथा दूसरी राशि पर मन्द गति ग्रह हो परन्तु मध्यान्तर दीप्तांशो के अन्तर्गत हों।

इस वर्ष आपकी वर्तमान शीघ्र गति ग्रह बुध ( धनु 14:27:52 ), एवं मन्दगति ग्रह शनि ( धनु 18:24:55 ), के मध्य है।

इस योग के शुभ प्रभाव से इस वर्ष आपको सन्तान से पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा जो लोग सन्तति की अपेक्षा कर रहे है उन्हे सन्तति की अवश्य प्राप्ति होगी। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा तथा अध्ययन के क्षेत्र में उनको वांछित सफलता मिलेगी। राजनीति में सक्रिय लोग इस समय राजनैतिक लाभ भी अर्जित कर सकते है। इसके अतिरिक्त अधिकार प्राप्त लोगो से भी सम्पर्क स्थापित होंगे जिससे वांछित लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। इस समय मामा या माता के संबन्धियों से विशिष्ट लाभ के योग बनेंगे। यदि बीमार चल रहे है तो रोग मुक्ति की दृष्टि से यह वर्ष अत्युत्तम रहेगा। साथ ही मुकद्दमे या चुनाव मे विजय मिलेगी एवं किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता अर्जित करेंगे। इस प्रकार यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं सफलता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा।

## इसराफ योग

यदि शीघ्रगामी ग्रह मन्दगामी ग्रह से आगे हो तो इसराफ योग होता है यह इत्थशाल का विपरीत होता है।

इसराफ योग मन्दगति ग्रह बुध ( धनु 14:27:52 ), एवं शीघ्र गति ग्रह चंद्र ( कुंभ 17:29:36 ), के मध्य बन रहा है।

वर्ष कुंडली में सामान्यतया यह योग अच्छा नहीं माना जाता है। इस योग के प्रभाव से हानि अनावश्यक तनाव तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में बाधाएं आती है। अतः ऐसे समय में आपको किसी भी प्रकार का पूंजीनिवेश नहीं करना चाहिए तथा सट्टे लाटरी या शेयर आदि पर व्यय से बचना चाहिए। साथ ही देश विदेश की लम्बी यात्राओं की भी उपेक्षा करनी चाहिए अन्यथा आपको यात्रा में हानि तनाव या अन्य प्रकार से सामना करना पड़ेगा। अतः बुद्धिमता पूर्वक कार्य कलापों को सम्पन्न करें। इसराफ योग मन्दगति ग्रह मंगल ( मीन 12:25:30 ), एवं शीघ्र गति ग्रह बुध ( धनु 14:27:52 ), के मध्य बन रहा है।

वर्ष कुंडली में सामान्यतया यह योग अच्छा नहीं माना जाता है। अतः इसके प्रभाव से इस समय भाइयों एवं बन्धुओं से मतभेद एवं समस्याएं उत्पन्न होंगी तथा परस्पर संबंधो में मधुरता में कमी आएगी। साथ ही आप में आत्मविश्वास एवं उत्साह के भाव की भी न्यूनता आएगी जिससे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में विलम्ब होगा। इस समय संचार सुविधाओं में भी कमी आ सकती है। इसके अतिरिक्त आपको सट्टे लाटरी या शेयर आदि पर पैसा नहीं लगाना चाहिए अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि के अधिक योग बनते है। जिसका प्रभाव आर्थिक स्थिति पर होगा इस प्रकार यदि आप धैर्य एवं संयम से कार्य करेंगे तो अशुभफलों में किंचित कमी आ सकती है।

## नक्त योग

यदि लग्नेश और कार्येश में दृष्टि न हो और उन दोनों के मध्य दीप्तांशों के अन्तर्गत ऐसा शीघ्रगामी ग्रह हो जो लग्नेश और कर्मेश को देखता हो तो एक ग्रह के तेज को लेकर दूसरों को देता है। इस योग में किसी तीसरे व्यक्ति की सहायता से कार्य बनता है।

नक्त योग बुध तथा शुक्र के मध्य है क्योंकि चंद्र शीघ्र गति ग्रह है तथा दोनों को देख रहा है।

इस योग के शुभ प्रभाव से इस समय स्त्री से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा अविवाहितों का विवाह होगा। साथ ही स्त्री के द्वारा भाग्योन्नति भी हो सकती है। धन वैभव अर्जित करने के लिए भी वर्ष उत्तम होगा तथा स्ववाक्चातुर्य से अपने प्रभाव में वृद्धि करेगें। उच्चाधिकारीवर्ग से आपको इस समय लाभ होगा तथा जो लोग राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय है वे राजनैतिक लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे।

## यमया योग

यदि लग्नेश और कार्येश की परस्पर दृष्टि न हो और कोई मन्दगति वाला ग्रह दीप्ताशों के अन्तर्गत हो तथा दोनों को देखता हो तो वह शीघ्रगति ग्रह मन्दगति वाले ग्रह को दे देता है।

यमया योग बुध तथा शुक्र के मध्य है क्योंकि मंगल मन्दगति ग्रह है तथा लग्नेश एवं कार्येश दोनों को देखता है।

इस योग के शुभ प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी यदि नौकरी पर है तो पदोन्नति का अवसर मिलेगा जिससे मान सम्मान एवं अधिकारों की वृद्धि होगी। व्यापार के क्षेत्र में व्यापार में विस्तार होगा अथवा कोई नया कार्य प्रारंम्भ होगा जिससे भविष्य में लाभ के प्रबल योग बनेंगे। धनार्जन की दृष्टि से वर्ष उत्तम फलदायी होगा। इस समय आपकी आय में वृद्धि होगी तथा आप के आय स्रोत एक से अधिक होगें जिससे आर्थिक सुदृढ़ता रहेगी। इसके अतिरिक्त प्रभावशाली लोंगो से भी सम्पर्क स्थापित होंगे।

## मणऊ योग

यदि लग्नेश एवं कर्मेश में इत्थशाल हो किन्तु कोई पाप ग्रह दोनों को या एक को भी शत्रु दृष्टि से देखता हो तथा दीप्तांशों के अन्तर्गत हो तो मणऊ योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

## कम्बूल योग

यदि लग्नेश और कार्येश में परस्पर इत्थशाल हो तथा इन दोनों में एक से भी चन्द्रमा इत्थशाल करता हो तो कम्बूल योग बनता है।

कम्बूल योग बुध और शनि के मध्य बन रहा है क्योंकि चन्द्रमा का बुध से इत्थशाल हो रहा है।

इस योग के शुभ प्रभाव से इस वर्ष आप बन्धुवर्ग से वांछित लाभ एवं सहयोग अर्जित करेगें तथा आपसी संबन्धों मे मधुरता का भाव होगा। इस समय दूर समीप की लाभदायक यात्राएं भी संपन्न होंगी। साथ ही आप स्वपराक्रम एवं बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी संचार सुविधाओं यथा टेलीफोन आदि में वृद्वि होगी तथा यदि प्रकाशन आदि के इच्छुक है तो इस वर्ष में आपको वांछित सफलता मिलेगी।

## गैरी कम्बूल योग

लग्नेश एवं कार्येश दोनों का इत्शाल हो परंतु चन्द्रमा की इन पर दृष्टि न हो किन्तु वही चन्द्रमा बलवान होकर अग्रिम राशि में जाकर किसी अन्य बलवान ग्रह से इत्थशाल करे तो

गैरी कम्बूल योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

## खल्लासर योग

लग्नेश और कार्येश का परस्पर इत्थशाल हो लेकिन शून्यमार्गी चन्द्रमा किसी से इत्थशाल न करता हो तो खल्लासर नामक योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

## रदद योग

यदि लग्नेश और कार्येश में कोई ग्रह अस्त नीच शत्रु क्षेत्री अथवा 6, 8, 12 में हो और परस्पर इत्थशाली हो, क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो रदद नामक योग बनता है।

रदद योग की सृष्टि बुध एवं शनि के मध्य हो रही है क्योंकि बुध सूर्य से युक्त है

इस योग के शुभ प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति में अत्यन्त ही सुदृढ़ता आएगी तथा आय पूर्ण होगी। इस समय आपकी महत्वाकांक्षाएं भी पूर्ण होगी एवं अधिकार सम्पन्न लोंगों से सम्पर्क स्थापित होंगे जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण रूके हुए कार्य आसानी से सम्पन्न होंगे। इस वर्ष में आपको अचानक धन लाभ के भी बनते है। साथ ही किसी जायदाद की प्राप्ति भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त ज्योतिष एवं पराविद्या के क्षेत्र में आपका रूझान हो सकता है।

## दुफालिकुत्थ योग

लग्नेश और कार्येश में इत्थशाल हो (1) इन दोनों में से मन्दगति वाला ग्रह अपनी उच्च राशि /स्वराशि /नवांश / द्रेष्काण आदि में बलवान हो तथा (2) शीघ्रगामी ग्रह अपनी उच्च स्वराशि में न हो तथा निर्बल हो तो दुफालिकुत्थ योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

## दुत्थकुत्थीर योग

यदि लग्नेश और कार्येश निर्बल होकर इत्थशाल करें और उनमें से एक किसी ग्रह से जो अपने उच्च या स्वगृह में बैठा हो, बलवान हो इत्थशाल करे तो दुत्थकुत्थीर योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

## तम्बीर योग

इस योग में लग्नेश और कार्येश की परस्पर दृष्टि नहीं होती किन्तु इन दोनों में से कोई एक ग्रह राशि के अन्त में होता है एवं आगामी राशि में स्वगृही ग्रह से दीप्तांशों के अन्तर्गत

इत्थशाल करता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

## कुत्थ योग

यदि वर्ष कुंडली में लग्नेश कार्येश बलवान हों तो कुत्थ योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

## दुरूफ योग

यदि वर्ष कुंडली में लग्नेश एवं कार्येश निर्बल हो तो दुरूफयोग बनता है।

इस वर्ष आपकी वर्ष कुंडली में लग्नेश एवं कार्येश दुर्बल है अतः दुरूपयोग बन रहा है।

इस योग के प्रभाव इस वर्ष आपको स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्त होगी तथा दाम्पत्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। इस समय अविवाहितों के विवाह होने के भी प्रबल योग बनेंगे। साझेदार से इस समय आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलेगा तथा जो लोग राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय है उन्हें राजनैतिक लाभ की अवश्य प्राप्ति होगी। कार्य क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता के लिए भी वर्ष श्रेष्ठ माना जाएगा। इस समय नौकरी में पदोन्नति होगी जिससे मान सम्मान एवं धन की वृद्धि होगी। व्यापारी वर्ग के लिए वर्ष उत्तम फलदायक सिद्ध होगा तथा उनके कार्य में विस्तार होगा जिससे आर्थिक सुदृढ़ता बनेगी। अतः वर्ष का लाभ उठाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए।

# अथ वर्षेशफलम्

वर्ष कुण्डली में जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश, मुन्थेश, त्रिराशिपति एवं दिवारात्रिपति में से जो सबसे बलवान हो तथा लग्न पर दृष्टि रखता हो, वर्षेश कहलाता है। इसका अपना विशिष्ट महत्व होता है। यह अपने शुभाशुभत्व से वर्ष के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण घटनाओं को प्रभावित करता है क्योंकि यह वर्ष पंचाधिकारयों में बलवान तथा लग्न पर प्रभाव रखता है अतः इसकी स्थिति अन्य समस्त ग्रहों से प्रबल हो जाती है तथा अधिकाँश शुभाशुभ फल इसी के प्रभाव से प्राप्त होते हैं। पूर्णबली होने से सम्पूर्ण वर्ष में शुभ फल प्राप्त होते हैं, मध्यबली होने से शुभाशुभ मिश्रित फल तथा हीन बली होने से अनिष्ट फल अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं। यथाः–

वर्षेश्वरो भवति यः स दशाधिपेऽब्दे।
ज्ञेयोऽखिलेऽब्दजनुषोर्बलमस्य चिन्त्यम्।।

वीर्योन्वितेऽत्र निखिलं शुभमब्दमाहुः।
हीनेत्वानिष्टफलता समता समत्वे।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

इस वर्ष में आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शरीर में कष्ट भी उत्पन्न होगा जिससे आपको परेशानी रहेगी। मानसिक स्थिति भी इस समय आपकी अच्छी नहीं रहेगी तथा मन में अशान्ति तथा व्याकुलता का भाव विद्यमान रहेगा। ज्ञानार्जन के प्रति भी इस समय आपकी रूचि रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक आप नवीन शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। मिष्ठान्न इस समय आपको प्रियकर लगेंगे तथा यत्न पूर्वक इनका भक्षण करेंगे जिससे आपको प्रसन्नता की अनुभूति होगी। इस समय आपका सामाजिक प्रभाव मध्यम रहेगा तथा यथा कदा ही अन्य जन आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष से भी आपको समय समय पर परेशानी उत्पन्न होगी तथा उनसे आप चिन्तित रहेंगे। स्त्री पक्ष से भी आप सामान्य सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त सामाजिक मान प्रतिष्ठा एवं यश भी मध्यम ही रहेगा।

व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में उन्नति के लिए वर्ष सामान्य रहेगा तथा परिश्रम पूर्वक अल्प मात्रा में ही लाभ एवं उन्नति होगी। साथ ही नौकरी या राजनीति में भी उन्नति में विलम्ब तथा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु जीविका कार्य निरन्तर चलने वाला रहेगा। आर्थिक स्थिति भी सामान्य ही रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ आर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। यद्यपि इस समय आपको कष्ट प्राप्त होगा परन्तु उसे छिपाने में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगे। राजनैतिक नेताओं या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके सम्बन्ध सामान्य ही रहेंगे तथा उनसे सहयोग तथा लाभ भी अल्प ही रहेगा साथ ही परिश्रम पूर्वक खेल के क्षेत्र में आपको सफलता मिल सकती है। इस प्रकार यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

# अथ मुंथाफलम्

जन्म के प्रथम वर्ष में लग्न ही मुंथा होती है और प्रतिवर्ष एक एक राशि बढ़ती है। अतः गत वर्ष संख्या में जन्म लग्न जोडे से तथा 12 से भाग देने पर शेषांक मुंथा की वर्तमान राशि होती है। मुंथा प्रतिमाह ढाई अंश तथा प्रतिदिन पाँच कला बढ़ती जाती है। यदि मुंथा शुभ ग्रह व अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट हो अथवा शुभ ग्रह या अपने स्वामी के साथ इत्यशाल करे तो शुभ फल की वृद्धि कर अशुभ फल का नाश करती है। यथाः–

शुभस्वामियुक्तेक्षितावीर्ययुक्तेन्थिहास्वामिसौम्येत्थशालं प्रपन्ना।
शुभं भावजं पोषयेन्नाशुभं साऽन्यथाभाव ऊह्यो विभृश्य।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

इस वर्ष में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा समय समय पर आप शरीर से कष्ट की अनुभूति करेंगे जिससे दुर्बलता रहेगी तथा स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहेगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को यथासमय पूर्ण करने में भी आप असमर्थ रहेंगे।मानसिक रूप से इस समय आप चिन्तित रहेंगे तथा मन में व्याकुलता का भाव विद्यमान रहेगा। शत्रु पक्ष भी आपका प्रबल रहेगा तथा आपके लिए समय समय पर अनावश्यक समस्याएं तथा व्यवधान उत्पन्न करेगा जिससे आपको काफी असुविधा होगी। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में आपकी मान हानि की भी संभावना रहेगी यह या तो आपके स्वयं के कार्यो से होगी अथवा जिससे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आपका कोई संबध न हो। अतः ऐसे अवसरों से आपको अत्यंत ही सावधान रहना चाहिए।

इस समय व्यापारिक या कार्य क्षेत्र के लिए भी समय विशेष अनुकूल नहीं रहेगा।नौकरी या राजनीति में इस समय आपके वरिष्ठ उच्चाधिकारी या सहयोगी आपसे असन्तुष्ट तथा अप्रसन्न रहेंगे फलतः आपकी पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न होंगी। व्यापार में भी इस समय रूकावटें उत्पन्न होंगी तथा इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप असमर्थ रहेंगे।फलतः आर्थिक स्थिति भी विशेष अच्छी नहीं रहेगी इसके अतिरिक्त बेरोजगारों को कार्य मिलने में अत्यंत ही कठिनाई रहेगी।

# अथ मुंथेशफलम्

वर्ष कुण्डली में मुंथा जिस राशि में स्थित हो उस राशि का स्वामी मुंथेश कहलाता है। यह वर्ष के पंचाधिकारियों में एक प्रमुख ग्रह होता है। अतः शुभभावस्थ मुंथेश के प्रभाव से जातक विशिष्ट परिस्थतियों में उत्तम लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहता है। यदि वर्ष प्रवेश के समय मुंथेश षष्ठ, अष्टम, द्वादश तथा चतुर्थ भाव में स्थित हो या अस्त, वक्री एवं पापग्रहों से युक्त हो अथवा क्रूर ग्रहों के स्थान से चतुर्थ या सप्तम स्थान में स्थित हो तो शुभ फलदायक न होकर अशुभफल, धनहानि या शरीर संबधी कष्ट प्रदान करता है। यथाः–

षष्ठेऽष्टमेन्त्ये भुवि वेन्थिहेशोऽस्तङगोऽथ वक्रोऽशुभदृष्टियुक्तः।
क्रूराच्चतुर्थास्तगतश्च भव्यो न स्याद्रुजं यच्छति वित्तनाशम्।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

इस वर्ष में आपका शारीरिक स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा समय समय पर आप शारीरिक कष्ट से परेशानी की अनुभूति करेंगे साथ ही मानसिक रूप से भी आप प्रायः अशान्त तथा उद्विग्न से रहेंगे। उत्साह के भाव की आप में इस समय अल्पता रहेगी अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो की सिद्धि में अनावश्यक विलम्ब होगा। बन्धु एवं मित्र वर्ग से इस वर्ष आपके संबध सामान्य ही रहेंगे तथा उनसे सुख, सहयोग एवं लाभ मध्यम रूप में ही प्राप्त होगा तथा यदा कदा तनाव पूर्ण संबध भी बनें रहेंगे इस समय आपके रूके हुए कार्य तथा मानसिक संकल्प अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे जिससे आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही इस वर्ष में जो भी कार्य प्रारंभ करेंगे उनमें आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। इसके साथ ही संतति पक्ष से आपको सुख एवं सहयोग मध्यम ही रहेगा परन्तु अपने कार्य क्षेत्र में वे उन्नतिशील रहेंगे।

व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में उन्नति की दृष्टि से वर्ष सामान्य रहेगा तथा परिश्रम एवं संघर्ष से ही वांछित सफलता प्राप्त होगी। व्यापार में इस समय पुराने कार्य पर ही परिश्रम करें तथा नवीन कार्य प्रारंभ करने की उपेक्षा करें। नौकरी या राजनीति में इस समय आपके पदोन्नति की संभावनाएं बनेगी परन्तु इसमें अनावश्यक विलम्ब तथा रूकावटें उत्पन्न होंगी । इस समय राजनैतिक महत्व के लोगों तथा उच्चाधिकारी वर्ग से संबध सामान्य ही रहेंगे तथा उनसे कोई विशेष सहयोग नहीं मिलेगा। आर्थिक स्थिति भी इस समय मध्यम रहेगी। अतः धैर्य पूर्वक अपने सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करें तथा समय बीतने की प्रतीक्षा करें।

# अथ वर्षलग्नेशफलम्

वर्ष लग्न के स्वामी को वर्षलग्नेश कहते हैं। वर्ष के पंचाधिकारियों में इसकी विशेष महत्ता है। अतः वर्ष की अनेक शुभाशुभ घटनाओं में लग्नेश का प्रभाव रहता है। साथ ही जातक के स्वास्थ्य, कार्य एवं भाग्य को वर्ष में यह विशेष रूप से प्रभावित करता है। यदि वर्ष लग्नेश पंचवर्गी बल से पूर्ण बलवान हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों या शुभ ग्रहों से युति हो और स्वयं केन्द्र तथा त्रिकोण स्थान में स्थित हो तो वह सम्पूर्ण अरिष्टों को नष्ट करके सुख और धन देता है। यथाः–

लग्नाधिपो बलयुतः शुभेक्षित युतोऽपि वा।
केन्द्रत्रिकोणगोऽरिष्टम् नाशयेत्सुखवित्तदः।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

इस वर्ष में आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा समय समय पर आप शारीरिक कष्ट से परेशान हो सकते है साथ ही मानसिक स्थिति भी अशान्त रहेगी तथा यदा कदा उद्विग्नता एवं व्याकुलता की आपको अनुभूति होगी। इस वर्ष में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्य परिश्रम से सम्पन्न होंगे तथा इनमें अल्प मात्रा में ही आपको सफलता मिलेगी। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि के लिए वर्ष मध्यम रहेगा तथा पारिवारिक जनों के मध्य कलह एवं मतभेद का भाव रहेगा। इस समय मातृ पक्ष या ससुराल से आप को न्यूनाधिक मात्रा में लाभ की भी प्राप्ति होगी साथ ही भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति एवं उपभोग भी आप करेंगे परन्तु इसकी मात्रा में न्यूनता रहेगी। धर्म के प्रति भी आपकी सामान्य श्रद्धा रहेगी परन्तु धार्मिक कार्य कलापों की आप उपेक्षा करेंगे।

व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र की उन्नति के लिए वर्ष सामान्यतया उन्नतिकारक एवं परिश्रमशील रहेगा तथा अत्यधिक परिश्रम से आप को व्यापार में अल्प सफलता ही प्राप्त होगी तथा लाभ मार्ग में भी रूकावट आएंगी। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आप की उन्नति में विलम्ब तथा व्यवधान उत्पन्न होंगे एवं विरोधी पक्ष भी प्रबल रहेगा । इसके अतिरिक्त वरिष्ठ नेता या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके संबंध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा इनसे लाभ एवं सहयोग भी अल्प ही प्राप्त होगा । सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश भी इस वर्ष मध्यम रहेगा साथ ही आर्थिक स्थिति में भी उतार चढ़ाव आएंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यंत ही परिश्रम एवं संघर्ष पूर्ण रहेगा।

# प्रथम मास

## 11/01/2019 00:49:20 से 09/02/2019 13:08:39 तक

| ग्रह | व | राशि | नक्षत्र | अंश |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | | कन्या | चित्रा | 27:18:05 |
| सूर्य | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 26:08:06 |
| चन्द्र | | कुम्भ | शतभिषा | 17:29:36 |
| मंगल | | मीन | उ०भाद्रपद | 12:25:30 |
| बुध | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 14:27:52 |
| गुरु | | वृश्चिक | ज्येष्ठा | 19:40:05 |
| शुक्र | | वृश्चिक | अनुराधा | 09:20:26 |
| शनि | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 18:24:55 |
| राहु | | कर्क | पुनर्वसु | 02:37:51 |
| केतु | | मकर | उत्तराषाढ़ा | 02:37:51 |
| मुंथा | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 18:55:35 |

मासाधिपति

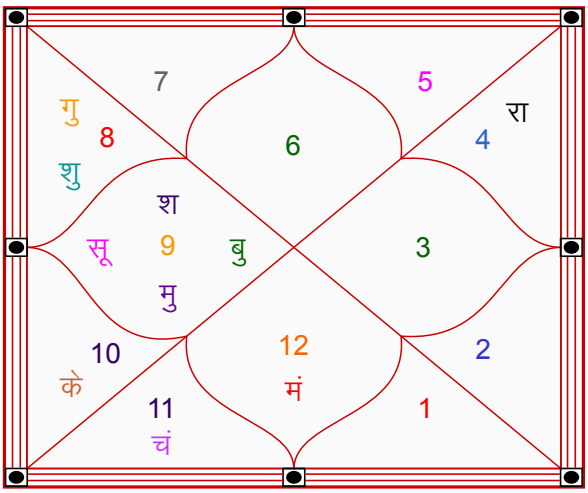


**मासाधिपति : शुक्र**

यह मास आपके लिए विशेष शुभ नहीं रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष के प्रबल होने से वे विभिन्न प्रकार से आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेगें। पारिवारिक जनों से भी इस समय अनावश्यक रूप से अनबन रहेगी जिससे पारिवारिक वातावरण अशान्त रहेगा। साथ ही मानसिक रूप से भी आप यदाकदा अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास आपके कार्य में मंदी आ सकती है या आपका कोई कार्य छूट सकता है। आपके अन्य समाजिक जनों से विवाद भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान में न्यूनता आएगी तथा धनहानि की भी सम्भावना होगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में उपरोक्त अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे। इससे शरीर में स्वस्थता,मन में सन्तोष एवं बुद्धि की वृद्धि होगी जिससे यह मास सामान्य रूप से व्यतीत होगा। साथ ही धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि रहेगी।

# द्वितीय मास

## 09/02/2019 13:08:39 से 11/03/2019 08:43:04 तक

| ग्रह | व | राशि | नक्षत्र | अंश |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | | वृष | रोहिणी | 12:04:38 |
| सूर्य | | मकर | धनिष्ठा | 26:08:06 |
| चन्द्र | | मीन | उ०भाद्रपद | 14:27:52 |
| मंगल | | मेष | अश्विनी | 02:24:27 |
| बुध | | कुम्भ | धनिष्ठा | 03:49:46 |
| गुरु | | वृश्चिक | ज्येष्ठा | 25:01:44 |
| शुक्र | | धनु | मूल | 12:02:57 |
| शनि | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 21:43:44 |
| राहु | व | कर्क | पुनर्वसु | 02:25:31 |
| केतु | व | मकर | उत्तराषाढ़ा | 02:25:31 |
| मुंथा | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 21:25:35 |

**मासाधिपति : शनि**

मासाधिपति

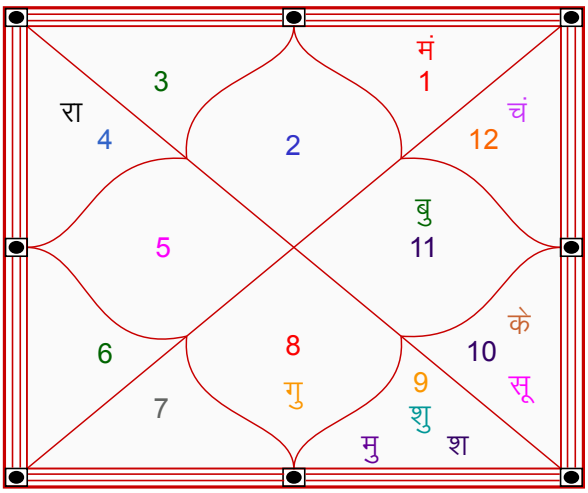


समान्य रूप से इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आप शत्रुओं से अनावश्यक रूप से भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा घर में किसी प्रकार से चोरी आदि की घटना भी घटित हो सकती है।साथ ही आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक रूप से परेशानी का अनुभव करेंगे। धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा में अल्पता आएगी तथा स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। इससे शारीरिक शक्ति में अल्पता आएगी। साथ ही आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं। सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे एवं मुकद्दमे आदि के कार्य में भी आपका धन व्यय होगा। अतः सावधानी पूर्वक ऐसे समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे।अतः स्त्री तथा पुत्र संतति से सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते हैं जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी एवं अन्य प्रकार से भी शान्ति की अनुभूति करेंगे।

# तृतीय मास

## 11/03/2019 08:43:04 से 10/04/2019 15:35:11 तक

| ग्रह | व | राशि | नक्षत्र | अंश |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | | मेष | अश्विनी | 00:37:38 |
| सूर्य | | कुम्भ | पू०भाद्रपद | 26:08:06 |
| चन्द्र | | मेष | भरणी | 16:21:50 |
| मंगल | | मेष | भरणी | 22:28:58 |
| बुध | व | मीन | उ०भाद्रपद | 03:27:52 |
| गुरु | | वृश्चिक | ज्येष्ठा | 28:48:14 |
| शुक्र | | मकर | श्रवण | 17:05:31 |
| शनि | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 24:26:23 |
| राहु | व | कर्क | पुनर्वसु | 00:53:49 |
| केतु | व | मकर | उत्तराषाढ़ा | 00:53:49 |
| मुंथा | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 23:55:35 |

**मासाधिपति : शनि**

मासाधिपति

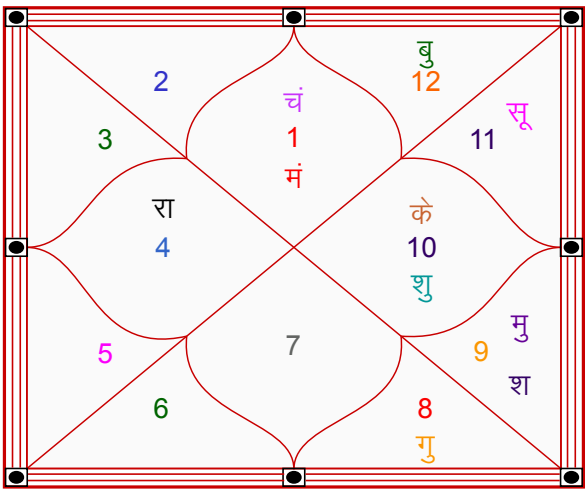


यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धन लाभ अर्जित करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न होंगे। इस मास में आप घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं। सन्तति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे तथा इनका आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनका पूजन एवं सम्मान करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। इस मास में समाज में आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा तथा भाग्योदय सम्बन्धी कार्यों में वृद्धि तथा उन्नति होगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता की प्रबलता रहेगी एवं दूर समीप की आप कोई लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न करेंगे। मित्र तथा बन्धुवर्ग से इस समय सम्बन्धों में घनिष्ठता होगी। इसके अतिरिक्त आप सर्वत्र मान प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

इसके साथ ही इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा वातोत्पन्न रोगों से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि का भी भय होगा जिससे हानि की आशंका बनी रहेगी। अतः संयम एवं सर्तकता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

# चतुर्थ मास

## 10/04/2019 15:35:11 से 11/05/2019 10:55:29 तक

| ग्रह | व | राशि | नक्षत्र | अंश |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | | सिंह | मघा | 09:56:56 |
| सूर्य | | मीन | रेवती | 26:08:06 |
| चन्द्र | | वृष | मृगशिरा | 26:07:38 |
| मंगल | | वृष | रोहिणी | 12:35:21 |
| बुध | | कुम्भ | पू०भाद्रपद | 28:31:46 |
| गुरु | | धनु | मूल | 00:13:43 |
| शुक्र | | कुम्भ | पू०भाद्रपद | 23:28:45 |
| शनि | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 26:05:00 |
| राहु | व | मिथुन | पुनर्वसु | 27:57:29 |
| केतु | व | धनु | उत्तराषाढ़ा | 27:57:29 |
| मुंथा | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 26:25:35 |

**मासाधिपति : गुरु**

मासाधिपति

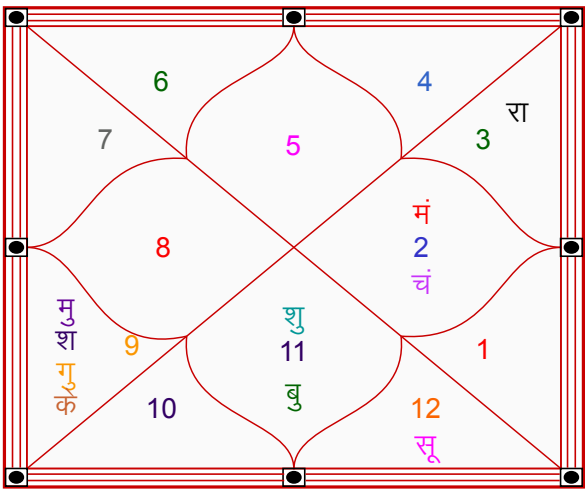


यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल प्रद ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता बनी रहेगी तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आप बुद्धि बल से ही सम्पन्न करेंगे। इस मास आप पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी होगा। आपके प्रभुत्व की इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग हृदय से आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके कई शुभ कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ एवं महत्वपूर्ण समाचार की प्राप्ति भी होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना पैदा होगी एवं आप श्रद्धा पूर्वक इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्च अधिकारी वर्ग से भी आप अनुकूल एवं वांछित लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से भी मुक्ति मिलेगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे जिसके प्रभाव से आप गर्मी या पितादि दोषों से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे एवं रक्त विकार होने की भी संभावना रहेगी। अतः इस मास में आपको शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी सजग रहना चाहिए।

# पंचम् मास

## 11/05/2019 10:55:29 से 11/06/2019 16:32:01 तक

| ग्रह | व | राशि | नक्षत्र | अंश |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | | कर्क | पुष्य | 04:04:55 |
| सूर्य | | मेष | भरणी | 26:08:06 |
| चन्द्र | | कर्क | पुष्य | 15:19:26 |
| मंगल | | मिथुन | मृगशिरा | 02:42:12 |
| बुध | | मेष | भरणी | 14:22:46 |
| गुरु | व | वृश्चिक | ज्येष्ठा | 28:49:22 |
| शुक्र | | मेष | अश्विनी | 00:48:03 |
| शनि | व | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 26:17:41 |
| राहु | | मिथुन | पुनर्वसु | 25:13:54 |
| केतु | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 25:13:54 |
| मुंथा | | धनु | उत्तराषाढ़ा | 28:55:35 |

**मासाधिपति : गुरु**

मासाधिपति

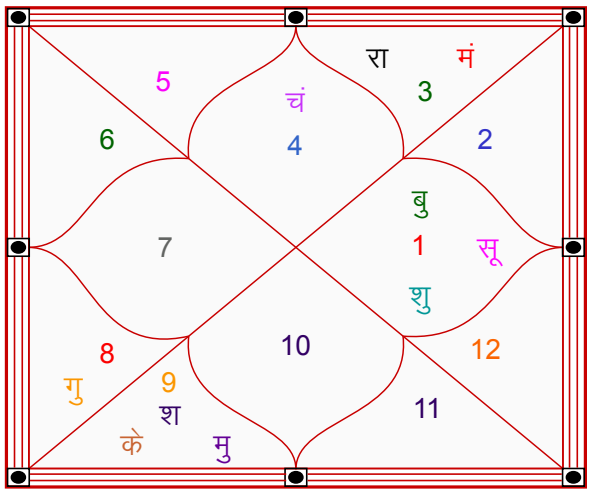


यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः आप शारीरिक रूप से दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष के प्रबल होने से उनकी तरफ से भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे अतः मन में भी अशान्ति रहेगी। आपके घर में इस मास चोरी भी हो सकती है अतः चोरों से सावधान रहें। साथ ही अपने उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग रखें एवं उनकी आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको दण्डित भी किया जा सकता है। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास अल्प मात्रा में ही सम्पन्न होंगे तथा धन का व्यय भी अनावश्यक तथा अधिक होगा।साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिसके लिए आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा।संबधियों एवं मित्रों से आपके संबधों में तनाव रहेगा एवं समाज से भी आप अपने को उपेक्षित महसूस करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगी ।

साथ ही इस समय आप वातोत्पन्न रोगों से भी पीड़ित रहेंगे। अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक धन हानि प्राप्त करेंगे अतः सोच समझकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक कष्ट न हों।

# षष्ठ मास

## 11/06/2019 16:32:01 से 13/07/2019 03:15:42 तक

| ग्रह | व | राशि | नक्षत्र | अंश |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | | तुला | विशाखा | 20:26:28 |
| सूर्य | | वृष | मृगशिरा | 26:08:06 |
| चन्द्र | | कन्या | हस्त | 12:03:58 |
| मंगल | | मिथुन | पुनर्वसु | 22:47:49 |
| बुध | | मिथुन | आर्द्रा | 17:15:53 |
| गुरु | व | वृश्चिक | ज्येष्ठा | 25:15:05 |
| शुक्र | | वृष | कृतिका | 08:47:29 |
| शनि | व | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 25:02:13 |
| राहु | व | मिथुन | पुनर्वसु | 23:48:21 |
| केतु | व | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 23:48:21 |
| मुंथा | | मकर | उत्तराषाढ़ा | 01:25:35 |

**मासाधिपति : बुध**

मासाधिपति

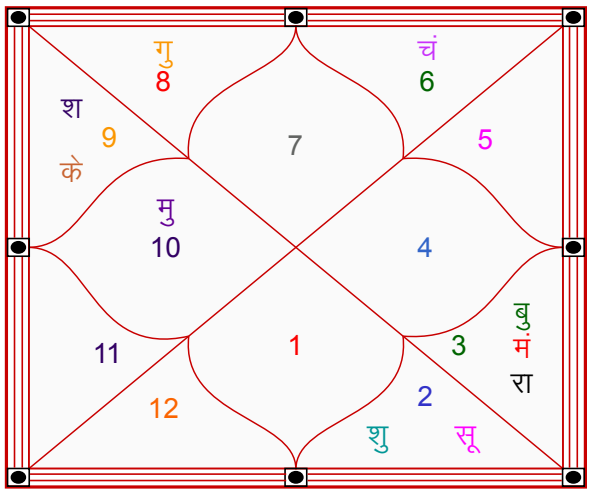


यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथापि न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति करगें। आपके शत्रु भी इस मास प्रबल रहेंगे फलतः उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट तथा अशान्त रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजिविका संबधी कार्य में शिथिलता आएगी तथा इनसे आपको पूर्ण लाभ नहीं होगा। साथ ही आपका कोई कार्य बन्द हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिर्वतन हो सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक जनों से आपका परस्पर वाद विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आऐगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी अवश्य अर्जित करेंगे। अतः स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा इनसे आप सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि की भी प्राप्ति करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार आपके लिए यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

# सप्तम् मास

## 13/07/2019 03:15:42 से 13/08/2019 12:25:18 तक

| ग्रह | व | राशि | नक्षत्र | अंश |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | | वृष | रोहिणी | 15:13:44 |
| सूर्य | | मिथुन | पुनर्वसु | 26:08:06 |
| चन्द्र | | वृश्चिक | अनुराधा | 09:31:18 |
| मंगल | | कर्क | पुष्य | 12:49:32 |
| बुध | व | कर्क | पुष्य | 09:23:51 |
| गुरु | व | वृश्चिक | ज्येष्ठा | 21:42:01 |
| शुक्र | | मिथुन | आर्द्रा | 17:13:55 |
| शनि | व | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 22:51:19 |
| राहु | | मिथुन | पुनर्वसु | 23:30:53 |
| केतु | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 23:30:53 |
| मुंथा | | मकर | उत्तराषाढ़ा | 03:55:35 |

**मासाधिपति : मंगल**

मासाधिपति

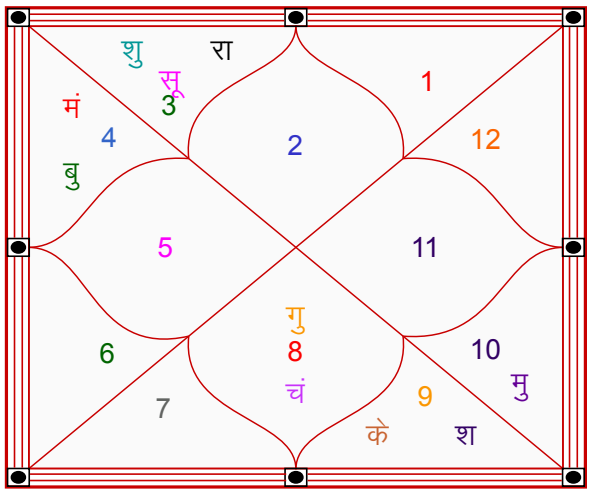


यह मास आपके लिए पूर्ण रूप से शुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा आप किसी सम्मानीय पद को प्राप्त करने में भी सफल होंगे। इस मास में आपका धनार्जन प्रचुर मात्रा में होगा तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न होने की संभावना रहेगी। साथ ही स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा यथाशाक्ति आप इनका पूजन तथा सत्कार करेंगे। समाज में इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा अधिकाशं भाग्योदय संबधी कार्य भी इसी समय सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता रहेगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। इस प्रकार इस समय सर्वत्र आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से मनोवांछित सहयोग तथा सुख की प्राप्ति करेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करके अन्य स्त्रोतों से भी धनार्जन तथा सुख संसाधन अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

# अष्टम् मास

## 13/08/2019 12:25:18 से 13/09/2019 13:47:10 तक

| ग्रह | व | राशि | नक्षत्र | अंश |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | | तुला | विशाखा | 20:39:46 |
| सूर्य | | कर्क | आश्लेषा | 26:08:06 |
| चन्द्र | | मकर | उत्तराषाढ़ा | 01:30:26 |
| मंगल | | सिंह | मघा | 02:44:27 |
| बुध | | कर्क | पुष्य | 07:37:41 |
| गुरु | | वृश्चिक | ज्येष्ठा | 20:22:58 |
| शुक्र | | कर्क | आश्लेषा | 25:52:06 |
| शनि | व | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 20:47:15 |
| राहु | व | मिथुन | पुनर्वसु | 23:18:07 |
| केतु | व | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 23:18:07 |
| मुंथा | | मकर | उत्तराषाढ़ा | 06:25:35 |

**मासाधिपति : शनि**

मासाधिपति

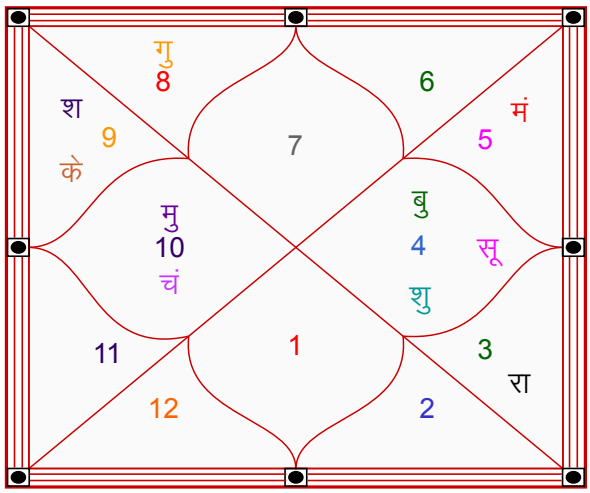


इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके शत्रु प्रबल रहेंगे तथा उनसे आप भयभीत तथा चिंतित रहेंगे। जिससे मानसिक रूप से आप उद्विग्नता तथा अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्य में मन्दी आएगी तथा कई अनावश्यक विध्नबाधाएं भी उत्पन्न होंगी। साथ ही आपका कोई कार्य बंद हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिर्वतन होने की संभावना बनेगी। समाज में अन्य लोगों से इस मास में आपका अनावश्यक विवाद या संघर्ष होगा जिससे सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शारीरिक कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप वातजनित रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार की क्षति या हानि हो सकती है। अतः सावधानी एवं सतर्कतापूर्वक अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

# नवम् मास

## 13/09/2019 13:47:10 से 14/10/2019 03:25:19 तक

| ग्रह | व | राशि | नक्षत्र | अंश |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | | धनु | मूल | 06:25:03 |
| सूर्य | | सिंह | पू०फाल्गुनी | 26:08:06 |
| चन्द्र | | कुम्भ | शतभिषा | 16:56:38 |
| मंगल | | सिंह | पू०फाल्गुनी | 22:30:44 |
| बुध | | कन्या | उ०फाल्गुनी | 04:12:13 |
| गुरु | | वृश्चिक | ज्येष्ठा | 21:59:10 |
| शुक्र | | कन्या | उ०फाल्गुनी | 04:21:00 |
| शनि | व | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 19:48:09 |
| राहु | व | मिथुन | पुनर्वसु | 21:27:23 |
| केतु | व | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 21:27:23 |
| मुंथा | | मकर | उत्तराषाढ़ा | 08:55:35 |

मासाधिपति

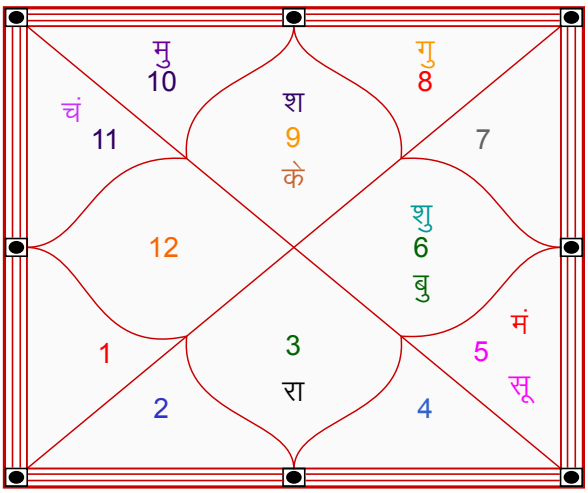


**मासाधिपति : सूर्य**

इस मास में आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही परिवार एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस समय आपके यश में भी अभिवृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आश्रय प्राप्त होगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल हो सकेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न के प्रति भी अधिक रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे।साथ ही आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रुवर्ग इस मास में आपका निर्बल रहेगा फलतः वे आपसे पराजित रहेंगे। स्त्री से भी आप सुख की प्राप्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापारादि कार्यो से भी आप अतिरिक्त आय अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवहेलना होगी तथा बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक हानि प्राप्त कर सकते है। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रहेगा।

# दशम् मास

## 14/10/2019 03:25:19 से 13/11/2019 04:41:37 तक

| ग्रह | व | राशि | नक्षत्र | अंश |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | | सिंह | मघा | 11:11:55 |
| सूर्य | | कन्या | चित्रा | 26:08:06 |
| चन्द्र | | मीन | रेवती | 26:30:10 |
| मंगल | | कन्या | हस्त | 12:08:46 |
| बुध | | तुला | स्वाति | 19:52:44 |
| गुरु | | वृश्चिक | ज्येष्ठा | 26:00:03 |
| शुक्र | | तुला | स्वाति | 12:20:10 |
| शनि | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 20:18:54 |
| राहु | व | मिथुन | आर्द्रा | 18:02:44 |
| केतु | व | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 18:02:44 |
| मुंथा | | मकर | श्रवण | 11:25:35 |

मासाधिपति

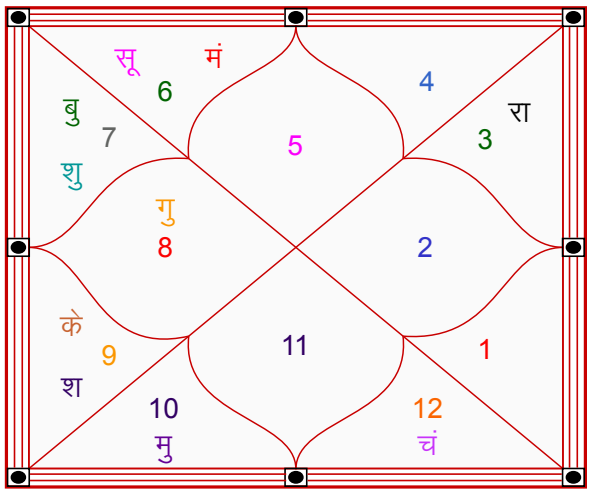


**मासाधिपति : शनि**

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी घटित होंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा अतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी।साथ ही आपके शत्रु भी इस महीने में प्रबल रहेंगे तथा आपके लिए समय समय पर समस्याएं उत्पन्न करेंगे।अतः इनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए।उच्चाधिकारी वर्ग से इस मास में आपको पूर्ण सहयोग करना चाहिए तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा उपेक्षा होने पर वे आपको दंडित कर सकते हैं।साथ ही इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे एवं धन का व्यय भी अधिक रहेगा जिससे आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी। इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबधियों से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही समाज से भी आप उपेक्षित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय सफल नहीं होगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य आपको यदाकदा शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम एवं बुद्धि बल से सम्पन्न होंगे। इस प्रकार आप सामान्य धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे।

# एकादश मास

## 13/11/2019 04:41:37 से 12/12/2019 20:13:42 तक

| ग्रह | व | राशि | नक्षत्र | अंश |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | | कन्या | चित्रा | 27:08:17 |
| सूर्य | | तुला | विशाखा | 26:08:06 |
| चन्द्र | | वृष | कृतिका | 00:48:05 |
| मंगल | | तुला | चित्रा | 01:41:59 |
| बुध | व | तुला | विशाखा | 23:03:33 |
| गुरु | | धनु | मूल | 01:36:33 |
| शुक्र | | वृश्चिक | ज्येष्ठा | 19:40:34 |
| शनि | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 22:12:02 |
| राहु | व | मिथुन | आर्द्रा | 15:13:24 |
| केतु | व | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 15:13:24 |
| मुंथा | | मकर | श्रवण | 13:55:35 |

मासाधिपति

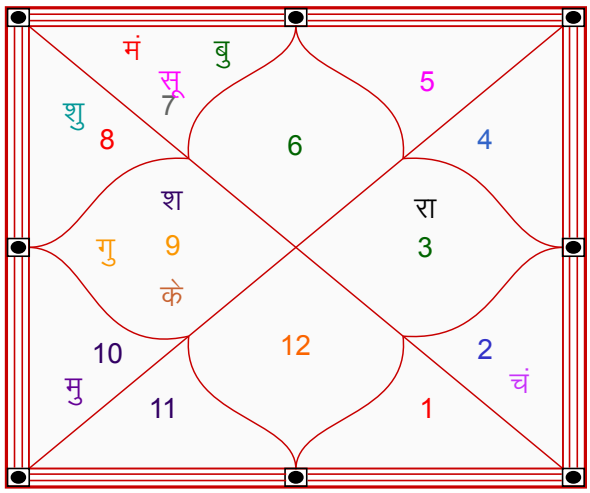


**मासाधिपति : शुक्र**

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही नवीन ज्ञानार्जन करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे।आपके महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी सुनने को मिलेगा।देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा के कार्य में तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग से भी लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में आप सफल होंगे।साथ ही आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से मुक्ति मिलेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धनार्जन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में समर्थ सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय धर्मानुपालन में तत्पर रह कर समाज के सभी लोगों में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा वे आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

# द्वादश मास

## 12/12/2019 20:13:42 से 11/01/2020 07:03:51 तक

| ग्रह | व | राशि | नक्षत्र | अंश |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | | मिथुन | पुनर्वसु | 26:50:13 |
| सूर्य | | वृश्चिक | ज्येष्ठा | 26:08:06 |
| चन्द्र | | मिथुन | मृगशिरा | 01:01:34 |
| मंगल | | तुला | विशाखा | 21:16:52 |
| बुध | | वृश्चिक | अनुराधा | 10:33:27 |
| गुरु | | धनु | मूल | 08:05:15 |
| शुक्र | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 26:24:43 |
| शनि | | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 25:03:58 |
| राहु | व | मिथुन | आर्द्रा | 14:15:43 |
| केतु | व | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 14:15:43 |
| मुंथा | | मकर | श्रवण | 16:25:35 |

**मासाधिपति : शनि**

मासाधिपति

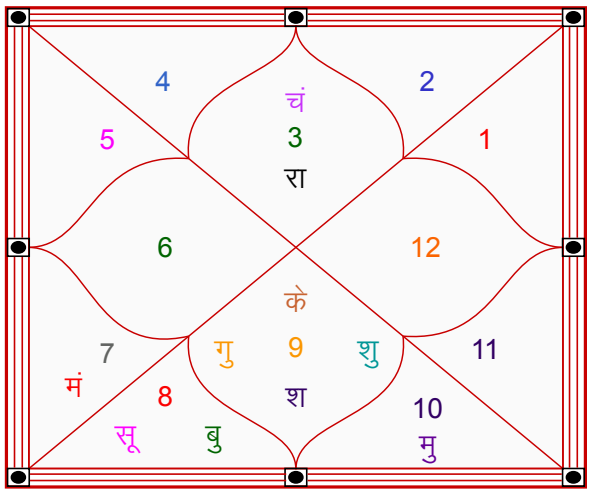


इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे तथा शुभ फल अल्प मात्रा में होंगे। इस समय शत्रुपक्ष के प्रबल होने से उनसे आप कष्ट प्राप्त करेंगे तथा चिन्तित भी रहेंगे।साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे तथा विभिन्न प्रकार से व्यवधान आते रहेंगे।साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आप आर्थिक दृष्टि से भी परेशान रहेंगे।धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आपको शारीरिक कष्ट हो सकते है।साथ ही आपकी कोई दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में भी आप असफल रहेंगे तथा किसी मुकद्दमे आदि में धन हानि की भी संभावना रहेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप असन्तुष्ट रहेंगे।अतः सावधानी तथा बुद्धिमता से समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में समय समय पर आप शुभ फल भी अर्जित कर सकेंगे। इसके प्रभाव से आप स्त्री का पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा जिससे आपके कई कार्य बुद्धिमता से पूर्ण होंगे तथा धनार्जन में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी श्रद्धा का भाव रखकर समाज में आदर प्राप्त करेंगे।

# लाल किताब – वर्ष कुँडली

## 2019

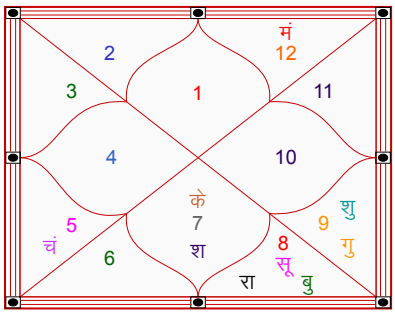


## 2020

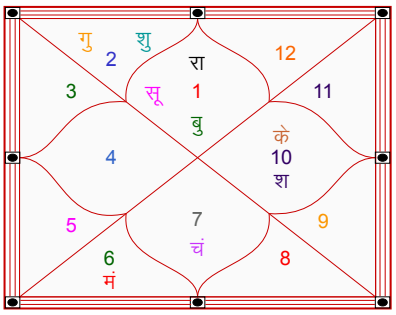


## 2021

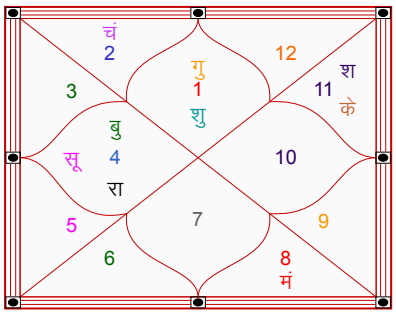


## 2022

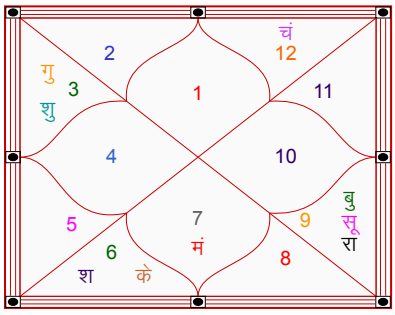


## 2023

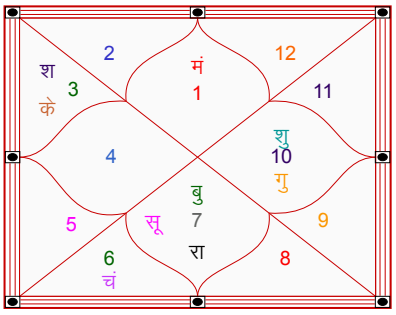


## 2024

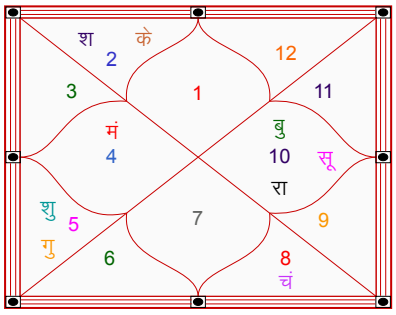


## 2025

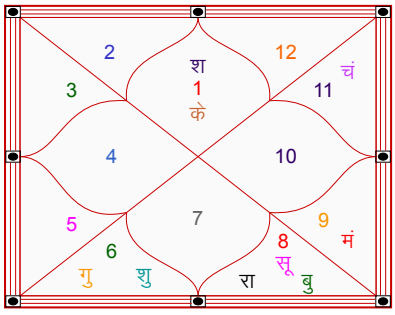


## 2026

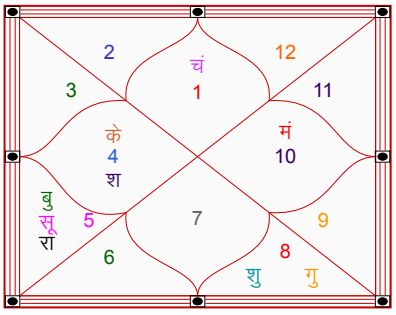


## 2027

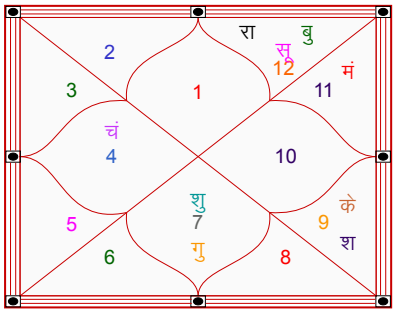


## 2028

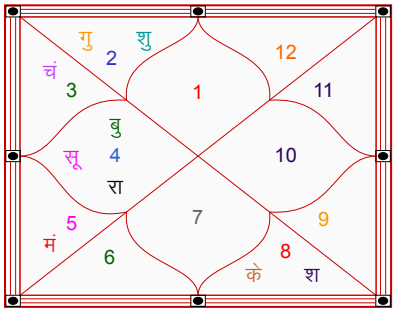


## 2029

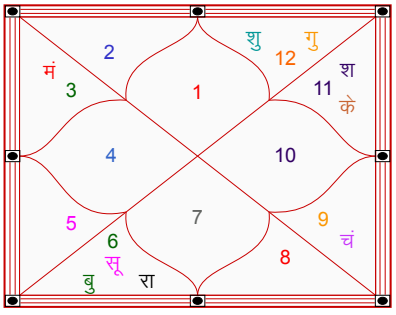


## 2030

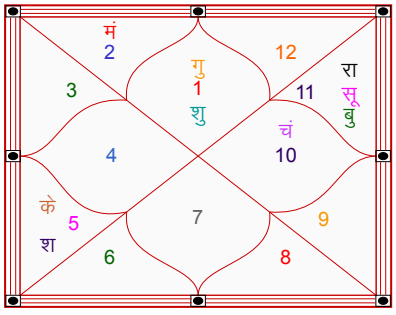

# लाल किताब वर्षफल 2019-2020

## वर्त्तमान आयु - 46
## वर्त्तमान दशा – राहु

| ग्रह | अंधा | सोया | धर्मी | नेक/मन्दा |
|---|---|---|---|---|
| सूर्य | –– | –– | –– | मन्दा |
| चंद्र | –– | –– | –– | नेक |
| मंगल | –– | –– | –– | नेक |
| बुध | –– | –– | –– | मन्दा |
| गुरु | –– | –– | –– | मन्दा |
| शुक्र | –– | –– | –– | मन्दा |
| शनि | –– | –– | –– | नेक |
| राहु | –– | –– | –– | मन्दा |
| केतु | –– | –– | –– | नेक |

## भाव स्थिति

| खाना | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सोया | हाँ | –– | हाँ | हाँ | –– | हाँ | –– | –– | –– | हाँ | हाँ | –– |

## वर्ष कुंडली 2019 – 2020

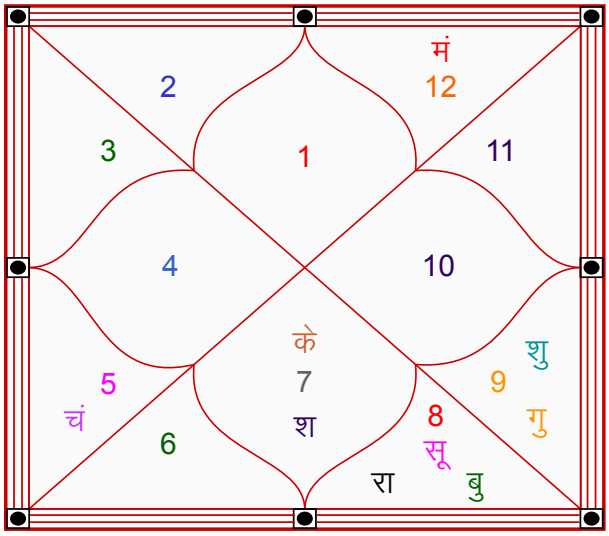


## वर्ष चन्द्र कुंडली 2019 – 2020

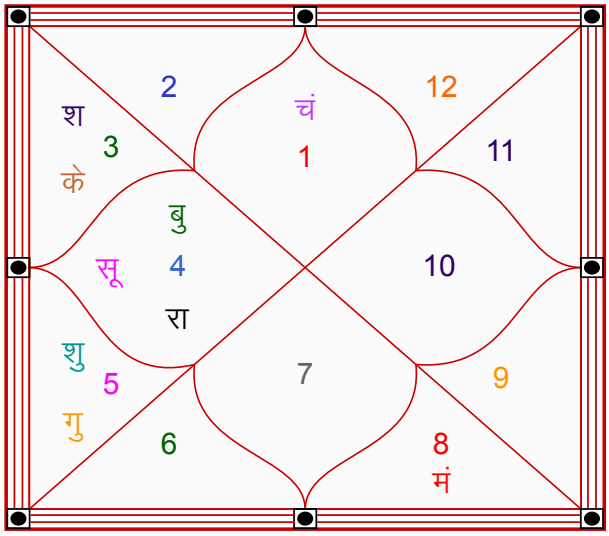

# लाल किताब वर्षफल 2019-2020

## सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष चाल–चलन खराब हुआ तो गुप्त रोग से दुःखी हो सकते हैं। गंदी सोहबत से आपके सम्मान पर धब्बा लगेगा और धन नष्ट हो, ऐसी आंशका है। अतः आपको इन बातों से बचना होगा। जहरीले कीट–पंतगे के काटने का भय है। टैक्स विभाग की चिंता रहेगी। चोरी–ठगी भी हो सकती है सतर्क रहें।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. बड़े भाई की सेवा करें या गाय की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य देवें।

## चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 5 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके परिवार वालों को सोने–चांदी का लाभ होगा, विद्या का लाभ होगा, आप दूसरों के कष्ट अपने पर झेलेंगे, दूसरों पर परोपकार करेंगे, लड़ाई–झगड़े में आप जिसका भी साथ देंगे उस व्यक्ति की जीत होगी। आपकी बहुत प्रसिद्धि होगी और समाज में आपका मान–सम्मान बढ़ेगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. हर कार्य में किसी की सलाह जरूर लेवें।
2. पाप के कामों में अपना हस्तोप न करें।

## मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 12 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी समाज में आवाज बुलन्द रहेगी, शत्रु मुंह की मार खायेंगे, मुसीबतें टल जाएगी, गुरु निर्धन–ब्राह्मण की सेवा में तत्पर रहेंगे, आप अपनी मनमर्जी के अनुसार कार्य करेंगे, किसी से दब कर नहीं रहेंगे। मीठा–भोजन या मिठाई आपको अधिक पसन्द रहेगी। मुकददमे में जीत या सरकारी विभाग से लाभ से लाभ हो सकता है।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. खुण्डा या जंग लगा हथियार घर पर न रखें।

2. लोग आपका नमक खाकर नमक–हरामी करेंगे, सतर्क रहे।

## बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष जादू–टोना आदि विद्याओं में रुचि या इनका प्रभाव रहेगा जो आपको लाभ न देगी। अन्दर ही अन्दर गुप्त रूप से आपको शरीर कष्ट या धन हानि का सामना करना पड़ सकता हैं। गृहस्थ में कुछ समस्याएं उभर सकती हैं। आलस्य आपके पतन का कारण बनेगा। खराब चाल–चलन और अनैतिक संबंध हार और हानि देंगे।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. वर्षा का पानी छत पर रखें।
2. इस वर्ष विवाह हो तो तांबे का बर्तन (गागर) मूंग साबित भरकर संकल्प करके पति/पत्नी दोनों जल प्रवाह करें। यदि विवाह हो चुका हो तो भी यह उपाय करना लाभ देगा।
3. गुदा पर सुरमा लगावें।

## गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष नास्तिक प्रवृत्ति बन सकती है जो आपके लिए शुभ नहीं है। बुजुर्गों से विरोध या झगड़ा आपको नहीं करना चाहिए। परिवार में किसी को दिल से संबंधित बीमारी हो सकती है। सोना बिक जाये या गिरवी पड़े या गुम हो जाए ऐसी संभावना है। किसी को दिया हुआ वायदा आप पूरा नहीं करेंगे तो हानि होगी।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गंगा स्नान करें 9 बार (दो महीने लगातार या महीने में एक बार या 9 दिन लगातार)
2. वचन और धर्म की पालना करें।

## शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष एल्युमिनियम के बर्तनों का प्रयोग करेंगे तो वह आपको हानिकारक हो सकते है। मादक द्रव्यों और चीजों का कुसंगति के कारण प्रयोग करना शुरू कर सकते हैं इससे बच कर रहें। स्त्री, धन, संतान पर समय मध्यम रहेगा। चाल–चलन ठीक रखें कारण गुप्त रोग का भय है। भाई–बंधुओं से सावधान रहें।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मकान बनाएं तो नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।
2. नीम के पेड़ के तने में चांदी के 9 चौरस टुकड़े दबायें (अगर आपके पुत्र संतान है तो)।

## शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष परोपकार करने से धन लाभ पाएंगे। यह लाभ 7 गुणा तक हो सकता है। मकान बनेगा और बुजुर्गों से जमीन–जायदाद का लाभ मिलेगा। आपको गांव/शहर या किसी संस्था में पद मिल सकता है। पिता/ससुर और पत्नी के लिये समय शुभ रहेगा। चाल–चलन खराब रखने से धन हानि होगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. डाक्टर/कैमिस्ट का साथ न रखें।
2. चोर–डाकू से संबंध न रखें।
3. बुजुर्गी मकान के मुख्य द्वार की दहलीज ठीक रखें उसके दोनों तरफ सूर्योदय से पहले सरसों का तेल डालें।

## राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष अंगहीन, निःसंतान, काने, गंजे व्यक्ति से दूर रहें। जन्म दिन के बाद आठवें मास से उलझनें बढ़ सकती हैं। किस्मत का असर झूले की तरह ऊपर–नीचे होता रहेगा, बिजली विभाग, जंगल विभाग, पुलिस विभाग से संबंधित कामों में परेशानी या धन और समय नाश हो सकता है। बंधन और कैद में न रहेंगे।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 चौरस सिक्के (औफदप) के टुकड़े जल प्रवाह करें।
3. जिस दिन इस वर्ष का 8वां मास शुरू हो उस दिन 43–43 बादाम मंदिर में ले जाकर वहां रखें, उसमें से 43 बादाम उठा कर घर पर लाकर सफेद थैली में रख लें।

## केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष दिनों–दिन आपके धन की बढ़ोत्तरी होती रहेगी, ऐसी संभावना है। आजीविका के नये साधन बनेंगे। आप अपनी धुन के पक्के रहेंगे। जिसके कारण आप बड़े से बड़े व्यक्ति के सामने अपना झंडा गाड़

लेंगे। आपकी संतान आपकी सहायता में रहेगी और संतान मुसीबत में दुश्मन को मार आयेगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. कलम से लिखने का काम न करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• सिक्के के (औफदप) 8 पीस चौरस जल प्रवाह करें या चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

# लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

## स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति–रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

## मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख–दुःख का

ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी–नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

## निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री मातृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ, भाई, चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर–बराबर वजन में चांदी लेकर उसी दिन दरिया में बहा देवे।

## पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू–टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने–जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने–बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

## कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि

काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन–दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल–ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षांत में घाटा हो जाना आदि।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

## पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

## स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल

चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

## निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

## निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ, भाई का परिवार चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर–बराबर धन लेकर सौ अलग–अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

## आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो

आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों–करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी–ठगी–गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा–मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी–व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

## ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

# लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई–बहन, माता–पिता, दादा–दादी, पुत्र–पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस–मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल–चलन ठीक र खें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री–परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग–बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40–43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति –रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।